Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

अल्लाह तआला का आदेश

یٰۤاَہۡلَ الۡکِتٰبِ قَدۡ جَآءَکُمۡ رَسُوۡلُنَا یُبَیِّنُ لَکُمۡ کَثِیۡرًا مِّمَّا کُنۡتُمۡ تُخۡفُوۡنَ مِنَ الۡکِتٰبِ وَیَعۡفُوۡا عَنۡ کَثِیۡرٍ ۬ؕ قَدۡ جَآءَکُمۡ مِّنَ اللّٰہِ نُوۡرٌ وَّ کِتٰبٌ مُّبِیۡنٌ (सूरत अलमायदा : 16)

अनुवाद : हे किताब वालों निसंदेह तुम्हारे पास हमारा वह रसूल आ चुका है जो तुम्हारे सामने बहुत सी बातें जो तुम (अपनी) किताब में से छुपाया करते थे ख़ूब खोल कर वर्णन कर रहा है और बहुत सी ऐसी हैं जिनसे वह केवल-ए-नज़र कर रहा है निसंदेह तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आ चुका है और एक रोशन किताब भी ।

वर्ष- 6
अंक- 21

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान
बदर
Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

14 शव्वाल 1442 हिज्री कमरी 27 हिजरत 1400 हिज्री शम्सी 27 मई 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम प्रश्न कभी अस्वीकार नहीं फ़रमाते

(1277) एक औरत नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक बुनी हुई चादर लाई, वह कहती थी : मैं इसको अपने हाथ से बुन कर इसलिए लाई हूँ कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह पहनने के लिए दूं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह ले ली। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उस की ज़रूरत थी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर निकले और वह चादर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का तह-बंद (अधोवस्त्र) थी। एक व्यक्ति ने इस की प्रशंसा की और कहा : मुझे पहनने के लिए दे दीजिए, यह क्या ही अच्छी है। लोगों ने कहा : तुम ने अच्छा नहीं किया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह पहनी है, ऐसी हालत में कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उसकी ज़रूरत थी। फिर बावजूद उसके तुमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मांगी है और तुम्हें इलम है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम प्रश्न अस्वीकार नहीं किया करते। उसने उत्तर दिया : मैं ने अल्लाह की क़सम इस लिए नहीं मांगी कि उसे पहनूँ बल्कि इस लिए मांगी है कि ताकि वह मेरा कफ़न हो। रावी ने कहा : इसलिए वह (चादर) उनका कफ़न हुई।

हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीऊल्लाह शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हु इस हदीस की व्याख्या में फ़रमाते हैं सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके मांगने को बुरा समझा। लेकिन यह सुन कर कि वह इस चादर को बतौर अपने कफ़न के प्रयोग करेगा वे ख़ामोश हो गए और किसी ने आपत्ति नहीं की। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बावजूद इसके कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को ज़रूरत थी वह चादर उस मांगने वाले को दे दी और इस तरह یُؤۡثِرُوۡنَ عَلٰۤی اَنۡفُسِہِمۡ وَلَوۡ کَانَ بِہِمۡ خَصَاصَۃٌ की पवित्र मिसाल प्रस्तुत की।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताब अल्जनायज़, प्रकाशन क़ादियान 2006)

हमारी यही इच्छा है कि उनको उस ख़ुदा का पता दें जिसे हमने पाया और देखा है और वह सब से निकट के मार्ग बतलाएं जिससे इन्सान शीघ्र ख़ुदा वाला हो जाता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अल्लाह के दरगाह में मुकर्रबान का स्थान

यह याद रखो कि ख़ुदा तआला की ग़ैरत कभी तक़ाज़ा नहीं करती कि इस को ऐसी हालत में छोड़े कि वह अपमानित हो कर पीसा जाए नहीं बल्कि जैसे वह ख़ुद एक तथा साझी रहित है वह अपने इस बंदा को भी एक फ़र्द और वहदहु लाशरीक बना देता है। दुनिया के तख़्ता पर कोई इन्सान उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता। हर तरफ़ से इस पर हमले होते हैं और हर हमला करने वाला उसकी ताक़त के अंदाज़ा से आज्ञान हो कर जानता है कि मैं उसे तबाह कर डालूँगा, परन्तु अन्त में उसको पता चल जाता है कि इस का बच निकलना इन्सानी ताक़त से बाहर किसी शक्ति का काम है। क्योंकि यदि उसे पहले से यह पता होता तो वह हमला भी न करता। अत: वे लोग जो ख़ुदा तआला के हुज़ूर एक सानिध्य प्राप्त करते हैं और दुनिया में उसके वजूद और हस्ती पर एक निशान होते हैं। ज़ाहिर में इस किस्म के होते हैं कि हर एक विरोधी अपने विचार में यह समझता है कि मेरे मुक़ाबला में यह बच नहीं सकता ,क्योंकि हर किस्म की चेष्टा और कोशिश के परिणाम उसे यहीं तक पहुंचाते हैं, परन्तु जब वह इस ज़द में से एक इज़्ज़त और सम्मान के साथ और सलामती से निकलता है तो एक क्षण के लिए तो उसे हैरान होना पड़ता है कि यदि इन्सानी ताक़त का ही काम था ,तो इस का बचना असम्भव था परन्तु अब उसका सही सलामत रहना इन्सान का नहीं बल्कि ख़ुदा का काम है। अत: इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआला की दरगाह के सानिध्य प्राप्त लोगों पर जो विरोधियों के हमले होते हैं,वे क्यों होते हैं? मार्फ़त और ज्ञान के मार्ग से अज्ञान लोग ऐसे विरोधों को एक अपमान समझते हैं,परन्तु उनको क्या ख़बर होती है कि इस अपमान में उनके लिए एक इज़्ज़त और अन्तर होता है जो अल्लाह तआला के वजूद और हस्ती पर एक निशान होता है। इसी लिए ये वजूद अल्लाह तआला के निशान हैं।

अत: हम जो इश्तिहार दे देकर लोगों को बुलाते हैं तो हमारी यही इच्छा है कि उनको उस ख़ुदा का पता दें जिसे हमने पाया और देखा है और वह सब से निकट के मार्ग बतलाएं जिससे इन्सान शीघ्र ख़ुदा वाला हो जाता है। अत: हमारे विचार में क़िस्सा कहानी से कोई मार्फ़त और ज्ञान तरक़्क़ी नहीं पा सकता जब तक कि ख़ुद व्यावहारिक हालत से इन्सान न देखे और यह केवल इस राह के जो हमारी राह है उपलब्ध नहीं और इस राह के लिए ऐसी कठिनाइयों और चोष्टाओं की ज़रूरत नहीं। यहां दिल काम करने वाला है। ख़ुदा तआला की निगाह दिल पर पड़ती है और जिस दिल में मुहब्बत और **इशक़** हो उसको मूर्ती की क्या अवश्यकता? मूर्ती पूजा से इन्सान कभी सही और विश्वसनीय परिणामों पर पहुंच नहीं सकता।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 253 से 260 प्रकाशन 2008

सितारों और दरियाओं को ख़ुदा बनाने वाले कब उन पर हुकूमत करने का साहस कर सकते हैं और इन्सानों को ख़ुदा बनाने वाले कब उनसे लाभ उठा सकते हैं

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत राअद आयत 15 لَہٗ دَعۡوَۃُ الۡحَقِّ ؕ وَالَّذِیۡنَ یَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِہٖ لَا یَسۡتَجِیۡبُوۡنَ لَہُمۡ بِشَیۡءٍ اِلَّا کَبَاسِطِ کَفَّیۡہِ اِلَی الۡمَآءِ لِیَبۡلُغَ فَاہُ وَمَا ہُوَ بِبَالِغِہٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الۡکٰفِرِیۡنَ اِلَّا فِیۡ ضَلٰلٍ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

इस आयत में बताया गया है कि जिस तरह उत्तम चीज़ को अदना स्थान देने वाला इन्सान लाभ से वंचित रह जाता है इसी तरह अदना को आला स्थान देने वाला भी उस के लाभ से वंचित रह जाता है। खरे सिक्के को खोटा समझने वाला भूका मरेगा क्योंकि सिक्के को प्रयोग नहीं करेगा। परन्तु खोटे को खरा समझने वाला भी वक़्त पर तकलीफ़ उठाएगा क्योंकि वह उसके काम नहीं आएगा। जो ख़ुदा तआला की सिफ़ात से आगाह नहीं वह उसकी रहमतो से वंचितम रहेगा लेकिन जो मख़लूक़ात को ख़ुदा बनाएगा वह भी उन मख़लूक़ात के लाभ से वंचित रहेगा। उदाहरणता पानी इन्सान के लाभ की एक चीज़ है और इन्सान के काम आने के लिए बनाया गया है यदि कोई पानी को इन्सान का ही स्थान दे दे और जिस तरह आदमी-आदमी को बुलाता है हाथ फैला कर उसे बुलाना शुरू कर दे तो पानी उसके पास नहीं आएगा और वह पानी के लाभ से वंचित रह जाएगा। इसी तरह जो लोग मख़लूक़ात को ख़ुदा बनाते हैं

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेरेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-13)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वाकफ़ीन नौ बच्चों की हुज़ूर अनवर के साथ ख़ुसूसी क्लासिज़, नमाज़ जनाज़ा हाज़िर और ग़ायब., समारोह

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

3 जून 2015 ई (दिनांक इतवार)(शेष............)

वाकफ़ीन नौ बच्चों की हुज़ूर अनवर के साथ ख़ुसूसी क्लासिज़

एक वक्फ़े नौ ने प्रश्न किया कि अहमदी बच्चों को smartphone लेने की आज्ञा है?

तो इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अहमदी बच्चों को smartphone लेने की आज्ञा इस शर्त पर है यदि उनका ग़लत प्रयोग नहीं करते और तुम्हारे अम्मां अब्बा भी इस बात पर राज़ी हो जाते हैं। परन्तु यदि तुम सारा दिन chat करते रहो और देखते रहो और ग़लत किस्म की applications उस के अंदर डाल लो और फिर बजाय नेक आदमी बनने के व्यर्थ किस्म की बातें सीखते रहो। तो मेरे विचार में ऐसा नहीं होना चाहिए। परन्तु तुम्हारी यह हालत देख के ही तुम्हारे अम्मां अब्बा फ़ैसला करेंगे कि तुम्हें देना चाहिए कि नहीं। तुम मेरे से उसूली आज्ञा लेकर अपने अम्मां अब्बा को ना कह देना जाके कि आज्ञा मिल गई।

एक वक्फ़े नौ तिफ़्ल ने प्रश्न किया कि facebook प्रयोग करना मना क्यों है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिलने फ़रमाया : यह कोई शरई हुक्म नहीं है। शरीयत में तो मना नहीं। मैंने इस लिए मना किया था कि आजकल के facebook में लोग बुराईयों में ज़्यादा पड़ जाते हैं और अच्छाईयां कम हैं। परन्तु जमाअत अहमदिया ने facebook बनाई हुई है। जमाअत अहमदिया का alislam के ऊपर facebook भी है। जमाअत अहमदिया की दूसरी ज़ेली तंज़ीमें हैं उन्होंने facebook बनाई हुई हैं। कुछ इन्फ़िरादी लोगों ने, दो-चार ने इकट्ठे हो कर अपनी facebook बनाई हुई है, जिससे वह तब्लीग़ करते हैं। तो यह हराम नहीं है, परन्तु होशोहवास से इस का प्रयोग करने के लिए, ज़रूरी है कि एक हद तक एहतियात की जाए। जब तुम्हें अक़्ल आ जाए तो तब इस में क्योंकि facebook के माध्यम से बहुत सारी बुराईयां फैल रही हैं। facebook के माध्यम से कुछ लड़कों को कुछ लोगों ने ग़लत कामों में डाल दिया। कुछ लड़कीयों से ग़लत काम करवा लिए। फिर उनको blackmail करते हैं, फिर उनको ग़लत रस्तों पर चलाते हैं, जमाअत से उनको दूर हटाते हैं। अभी तुम्हारा ज्ञान जमाअत का इतना नहीं है। पहले जमाअत के बारे में पूरा ज्ञान प्राप्त करो। फिर किसी मज़हबी facebook पर जाओ। फिर दुनिया-दारी का मुअल्लिम जो है इस में भी तुम्हारी इतनी अक़्ल हो कि facebook पर जो कुछ प्रश्न उठते हैं। इन का उत्तर दे सको। अभी तुम प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते और तुम्हारे अम्मां अब्बा भी यदि तुम्हें उस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकेंगे तो तुम समझोगे facebook वाला जो तुम्हें approach कर रहा है वह सही है, हालाँकि तुम्हें चाहिए था कि उसकी जाँच पड़ताल करो, जमाअत के किसी पढ़े लिखे आदमी से किसी आलिम से पूछो, मुरब्बी साहिब से रुजू करो, अपने incharge से पूछो। तो facebook में बहुत सारी ऐसी बातें आ जाती हैं जिनसे बुराईयां फैलने का विचार है और बुराईयां फैलती हैं। यूरोप में बहुत सारे लोग ऐसे भी हैं और अमरीका में भी हैं जिन्हों ने कहा है कि हमें facebook ने ग़लत कामों में डाल दिया। इस लिए मैंने कहा था इस से बचने का प्रयास करना चाहिए। तुम्हारी आयु अभी नहीं है। हाँ यदि facebook में जाना है तो जो जमाअती facebook हैं उन पर जाओ।

एक बच्चे ने कहा कि मैंने पूछना है कि यदि कोई जर्मन या कोई दूसरा हम से पूछे कि आपको कैसे पता है कि इस्लाम सच्चा धर्म है तो हम उनको कैसे बताएँगे?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : देखो पहली बात तो यह है कि सबसे बड़ा ज़िंदा सबूत हमारे पास यह है कि क़ुरआन-ए-करीम ने यह दावा किया कि यह क़ुरआन-ए-करीम original शक्ल में महफ़ूज़ रहेगा। चौदह सौ, पंद्रह सौ वर्ष हो गए और यह महफ़ूज़ रहा। तौरात और दूसरी कुतुब, इंजील और बाईबल और दूसरी पुस्तकें जो विभिन्न अनबया पर उतरीं वह एक हद तक, जब तक उनकी शिक्षा की आवश्यकता थी, महफ़ूज़ रहे। उसके बाद बिगड़ गए। बाईबिल भी बिगड़ गई थी, तौरात भी बिगड़ गई थी, तभी तो यहूदी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में भी अनुकरण नहीं करते थे। परन्तु क़ुरआन-ए-करीम का यह दावा कि यह हमेशा महफ़ूज़ रहेगा तो यह आज तक महफ़ूज़ है। तुम्हारे पास print की सूरत में, किताब की सूरत में महफ़ूज़ है। बहुत सारे हाफ़िज़-ए-क़ुरआन हैं, क़ुरआन-ए-करीम हिफ़्ज़ कर लेते हैं, हज़ारों लाखों हाफ़िज़-ए-क़ुरआन इस्लाम में हैं जिन्होंने हिफ़्ज़ किया हुआ है, उनके सीनों में महफ़ूज़ है। फिर हम पाँच नमाज़ों में इस की आयतें पढ़ते हैं, क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करते हैं तो एक बहुत बड़ा सबूत यह है कि क़ुरआन-ए-करीम के माध्यम जो शरीयत उत्तरी वह सच्ची शरीयत है और दावा है कि हमेशा महफ़ूज़ रहेगी तो महफ़ूज़ रही। तो एक बहुत बड़ी दलील यही है। फिर यह कि revival के लिए उसके नए सिरे से इस को जारी रखने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई, उसके अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आ गए। उन्होंने दावा किया और जमाअत अहमदिया क़ायम हुई और हम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत के काम, इस्लाम की तरक़्क़ी के काम को आगे बढ़ा रहे हैं और जो दूसरे लोग हैं वह इस्लाम की शिक्षा पर अनुकरण करते हुए अपने मिशन को आगे नहीं फैला रहे, मसला ईसाईत थी, एक ज़माना में यदि फैली भी तो वह केवल लोगों के स्वभाव के अनुसार अपनी शिक्षा को ढालती रही, अफ़्रीक़ा में और माध्यम से शिक्षा दी जा रही है, यूरोप में और रूप से दी जाती है और फिर आहिस्ता-आहिस्ता इस धर्म को लोग छोड़ भी रहे हैं और इस्लाम स्वीकार करने की ओर आ रहे हैं और अल्लाह के फ़ज़ल से हज़ारों लाखों लोग प्रत्येक वर्ष अहमदी मुस्लमान भी बनते हैं। तो यह मोटी-मोटी बातें बतादें, यह सच्चाई की दलील हैं। फिर दुआएं स्वीकार होती हैं, ख़ुदा तआला अहमदियों की दुआएं स्वीकार करता है। तुम्हारी दुआ स्वीकार हुई कभी? इस पर बच्चे ने सिर हिलाया। इस पर हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया बस यह भी फिर सच्चाई है। बहुत सारी दलीलें दिया करो और अपनी स्वीकृत दुआ की दलील दो।

एक बच्चे ने प्रश्न किया कि हुज़ूर ने एक ख़ुतबा में इतफ़ालुल अहमदिया को mobile रखने से मना किया कि यह हमारे लिए इस लिए मना है क्योंकि हम कोई bussiness नहीं करते न कोई काम करते हैं जिस के लिए हमें फ़ोन की आवश्यकता पड़े। मैंने यह भी सुना है कि जब कोई ख़ादिम बन जाता है। पंद्रह वर्ष का होता है तो वह ले सकता है। तो मेरा प्रश्न है कि जब कोई तिफ़्ल पंद्रह वर्ष का हो जाए तो उसको mobile लेने की आज्ञा है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया प्रश्न यह है कि mobile कोई गुनाह तो नहीं है, यदि आवश्यकता है, कुछ माँ बाप बड़े वहमी होते हैं वह समझते हैं हमारे बच्चों से हमारा सम्पर्क रहे, वह चौदह पंद्रह वर्ष की आयु में ले देते हैं, यदि तो तुम इसका ग़लत प्रयोग नहीं कर रहे और आजकल के जो mobile आए हुए हैं cellphone आए हुए हैं iphone है या वे जो उसने नाम लिया था स्मार्टफ़ोन और जो दूसरे, samsung इत्यादि के जितने फ़ोन हैं android इत्यादि, उन पर दूसरी applicationsभी आती जाती हैं, ग़लत बातें भी आ जाती हैं, यदि तो तुम उनको नेक कामों के लिए प्रयोग करते होतो मैंने जैसे पहले भी बताया, तो कोई हर्ज नहीं

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्ब: जुमअ:

दुआओं की स्वीकार्यता के लिए भी कुछ शर्तें हैं अत: हम जब उन शर्तें के अनुसार अपनी दुआओं में हुस्न पैदा करेंगे तो अल्लाह तआला को भी अपने निकट और दुआओं को सुनने वाला पाएंगे

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में दुआओं की महत्ता, स्वीकृति की शर्तें, फ़लसफ़ा और गहराई का शिक्षाप्रद वर्णन

हममें से बहुत से ऐसे हैं जो ऊपरी तौर पर दुआ करके फिर कहते हैं कि अल्लाह तआला ने हमारी दुआएं स्वीकार नहीं कीं। जैसे कि अल्लाह तआला को हमने एक काम कहा जिसको उसे मानना चाहिए था। अर्थात नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) अल्लाह तआला उनके हुक्मों का पाबंद है। जो चाहें वे कहें, जिस तरह चाहें वे कहें, जो चाहें उनके कर्म हों लेकिन अल्लाह तआला पाबंद है कि हमारी बातें सुने। अल्लाह तआला ने स्पष्ट फ़र्मा दिया यह नहीं होगा। पहले तुम्हें मेरी बातें माननी होंगी। अपने कार्यों को क़ुरआन की शिक्षा के अनुसार ढालना होगा

"यह सच्ची बात है कि जो व्यक्ति आमाल (कर्मों) से काम नहीं लेता वह दुआ नहीं करता बल्कि ख़ुदा तआला की परीक्षा लेता है इसलिए दुआ करने से पहले अपनी समस्त शक्तियों को ख़र्च करना ज़रूरी है और यही अर्थ इस दुआ के हैं।"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"शरीयत ने अस्बाब (माध्यम) को मना नहीं किया है और सच्च पूछो तो क्या दुआ अस्बाब (माध्यम) नहीं? या अस्बाब दुआ नहीं? तलाश अस्बाब बजाए ख़ुद एक दुआ है और दुआ बजाए ख़ुद महान अस्बाब का स्त्रोत है"

हमें इस रमज़ान में कोशिश करनी चाहिए कि हम अल्लाह तआला के प्रेम को पाने के लिए उसके हुक्मों पर चलने वाले हों, अपने ईमानों को मज़बूत करते चले जाने वाले हों

दुआ की हिक्मत और फ़िलोसफ़ी को समझने वाले हों, अपने आमाल (कर्मों) की इस्लाह करने वाले बनें और उन लोगों में शामिल हों जिन की दुआएं अल्लाह तआला के समक्ष स्वीकार होती हैं दूसरों के लिए दुआएं करने से भी अपनी दुआएं स्वीकार होती हैं

यह नुस्ख़ा हमेशा याद रखना चाहिए बल्कि दूसरों के लिए दुआएं करने वाले के लिए फ़रिश्ते दुआएं करते हैं और फ़रिश्तों की दुआएं जब हो रही हो तो यह किस क़दर लाभदायक सौदा है

अल-जज़ायर, पाकिस्तान और दुनिया में हर जगह तकालीफ़ में ग्रस्त अहमदियों के लिए दुआओं की तहरीक

ख़ुत्ब: जुमअ: सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 16 अप्रैल 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ○ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَاَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ○ شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا اَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ اَيَّامٍ اُخَرَ ؕ يُرِيْدُ اللهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۫ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ○ وَاِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ○ (البقرة:184تا187)

इन आयात का यह अनुवाद है कि हे वे लोगो जो ईमान लाए हो तुम पर रोज़े उसी तरह फ़र्ज़ कर दिए गए हैं जिस तरह तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किए गए थे ताकि तुम तक़्वा इख़्तियार करो। गिनती के कुछ दिन हैं। अत: जो भी तुम में से रोगी हो या यात्रा पर हो तो उसे चाहीए कि वह उतने दिनों के रोज़े दूसरे दिनों में पूरे करे। और जो लोग उस की ताक़त रखते हों उन पर फ़िद्या एक मिस्कीन को खाना खिलाना है। अत: जो कोई भी नफ़ली नेकी करे तो यह उसके लिए बहुत अच्छा है। और तुम्हारा रोज़े रखना तुम्हारे लिए बेहतर है यदि तुम ज्ञान रखते हो। रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन इन्सानों के लिए एक महान आदेश के तौर पर उतारा गया और ऐसे स्पष्ट निशानों के तौर पर जिनमें आदेश की तफ़सील और हक़्-ओ-बातिल में अंतर कर देने वाले विषय हैं। अत: जो भी तुम में से इस महीने को देखे तो उसके रोज़े रखे और जो रोगी हो या यात्रा पर हो तो गिनती पूरी करना दूसरे दिनों में होगा। अल्लाह तुम्हारे लिए आसानी चाहता है और तुम्हारे लिए तंगी नहीं चाहता और चाहता है कि तुम (आसानी से) गिनती को पूरा करो और इस आदेश की आधार पर अल्लाह की बड़ाई वर्णन करो जो उसने तुम्हें प्रदान की और ताकि तुम शुक्र करो। और जब मेरे बंदे तुझ से मेरे विषय में प्रश्न करें तो निसंदेह में निकट हूँ। मैं दुआ करने वाले की दुआ का उत्तर देता हूँ जब वे मुझे पुकारता है। अत: चाहीए कि वे भी मेरी बात पर लब्बैक कहें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि वे हिदयात पाएं।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस वर्ष फिर हमें रमज़ान के महीने में से गुज़रने का अवसर मिल रहा है। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि केवल रमज़ान के महीने को पाना और उस में से गुज़रना ही काफ़ी नहीं है या केवल सुबह सेहरी खा कर रोज़ा रखना और शाम को अफ़तारी करके रोज़ा खोलना ही रोज़ों के उद्देश्य को पूरा नहीं करता बल्कि उन रोज़ों के साथ और उन रोज़ों की वजह से अल्लाह तआला ने हमें अपने अंदर पवित्र बदलाव पैदा करने का हुक्म फ़रमाया है। रोज़ों के हवाले से अल्लाह तआला ने हमें कुछ हुक्म दिए हैं और इस के नतीजा में उन पर अमल करने की वजह से हमें अपना सानिध्य प्रदान फ़रमाने और दुआओं की स्वीकार्यता की खुशखबरी सुनाई है। उनमें से कुछ आयात मैंने तिलावत की हैं। अल्लाह तआला ने हमें इन आयात में जो मैंने तिलावत की हैं रोज़ों की फ़र्ज़ीयत की तरफ़ तवज्जा दिलाई है। इसी तरह यह भी बता दिया कि यदि बीमारी या कोई और जायज़ वजह है तो रोज़ों से छूट की अवस्था में फिर उनको बाद में पूरा करना चाहिए। या फिर उस का फ़िद्या है यदि कोई बिल्कुल पूरा न कर सके, कोई लंबी बीमारी है। लेकिन यह भी याद रहे कि यदि बाद में रोज़े रखने की ताक़त हो जाए तो फिर भी फ़िद्या देना बेहतर है यदि माली लिहाज़ से किसी को इस की ताक़त है।

फिर क़ुरआन करीम की महत्ता और इस के नुज़ूल के बारे में भी बता कर हमें यह बताया कि इस का पढ़ना और इस पर अमल करना हमारे लिए हिदयात और ईमान में मज़बूती का मार्ग है और अल्लाह तआला से सम्बन्ध क़ायम करने और उस की भेजी हुई शिक्षा को समझने का भी माध्यम है। और फिर हमें यह ख़ुशख़बरी

दी कि मेरे बंदों को बता दे कि हे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मैं उनके निकट हूँ। दुआओं को सुनता हूँ। स्वीकार करता हूँ। और रमज़ान के महीने में तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला निचले आसमान पर आ जाता अर्थात अपने बंदों की दुआओं को बहुत ज़्यादा सुनता है लेकिन अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि यदि तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारी दुआएं सुनूँ तो फिर तुम्हें भी मेरी बातों को मानना होगा। मैं ने जो आदेश दिए हैं उन पर अमल करना होगा। केवल रमज़ान के महीने में नहीं बल्कि उन नेकियों को सदेव के जीवन का हिस्सा बनाना होगा और अपने ईमानों को मज़बूत करना होगा। अत: दुआओं की स्वीकार्यता के लिए भी कुछ शर्ते हैं। अत: हम जब इन शर्ते के अनुसार अपनी दुआओं में सुन्दरता पैदा करेंगे तो अल्लाह तआला को भी अपने निकट और दुआओं को सुनने वाला पाएँगे।

इस वक़्त में दुआओं के हवाले से ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उपदेश पेश करके इस की महत्ता और हमें जो अपनी अमली हालतों को दरुस्त करना चाहिए उस के विषय में दुआओं की स्वीकार्यता की शर्ते क्या हैं और इस का फ़लसफ़ा और इस की गहराई के बारे में जो आप ने वर्णन फ़रमाया इस में से कुछ पेश करूँगा। हम में से बहुत से ऐसे हैं जो ऊपरी तौर पर दुआ कर के फिर कहते हैं कि अल्लाह तआला ने हमारी दुआएं स्वीकार नहीं कीं। जैसे कि अल्लाह तआला को हमने एक काम कहा जिसको उसे मानना चाहिए था। अर्थात नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) अल्लाह तआला उन के हुक्मों का पाबंद है। जो चाहें वे कहें, जिस तरह चाहें वे कहें, जो चाहें उनके कर्म हों लेकिन अल्लाह तआला पाबंद है कि हमारी बातें सुने। अल्लाह तआला ने स्पष्ट फ़र्मा दिया यह नहीं होगा। पहले तुम्हें मेरी बातें माननी होंगी। अपने कार्यों को क़ुरआन की शिक्षा के अनुसार ढालना होगा। रमज़ान के महीने में जब नेकियों का माहौल बना है। दरस-ओ-तदरीस का सिलसिला भी शुरू हुआ है तो मेरी हिदायात और आदेशों को देखो, ग़ौर करो, सुनो और उन पर अमल करो। अपने ईमानों का जायज़ा लो कि कितने मज़बूत ईमान हैं तुम्हारे। किसी मुश्किल में पड़ने पर, कठिनाई आने पर ईमान डगमगता तो नहीं होता ? बहरहाल यह एक ऐसा विषय है जिसमें क़दम बंदे ने ही पहले उठाना है और जब उस की इंतिहा होती है तो फिर अल्लाह तआला की रहमत और कृपा जोश में आती है, उस का फ़ज़ल जोश में आता है। अत: इस बात को समझना हमारे लिए बहुत ज़रूरी है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर फ़रमाते कि

"दुआ इस्लाम का विशेष फ़ख़र है और मुस्लमानों को इस पर बड़ा गर्व है। परन्तु याद रखों कि यह दुआ ज़बानी बक-बक का नाम नहीं है बल्कि यह वह चीज़ है कि दिल ख़ुदा तआला के भय से भर जाता है और दुआ करने वाले की रूह पानी की तरह बह कर आस्ताना ए उलूहियत (ख़ुदा के समक्ष) पर गिरती है और अपनी कमज़ोरीयों और लग़ज़िशों के लिए शक्तिमान और सामर्थ्यवान ख़ुदा से ताक़त और क़ुव्वत और मग़फ़िरत चाहती है और यह वह अवस्था है कि दूसरे शब्दों में इस को मौत कह सकते हैं। जब यह हालत हो जाए तो निसंदेह समझो कि कबूलियत का मार्ग उस के लिए खोला जाता है और विशेष क़ुव्वत और फ़ज़ल और इस्तिक़ामत बुराइयों से बचने और नेकियों पर इस्तिक़लाल के लिए प्रदान होती है। यह माध्यम सबसे बढ़कर ज़बरदस्त है।" (मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 263 प्रकाशन 1984 ई.)

अत: यह है दुआ का तरीक़ और अल्लाह तआला का सानिध्य पाने का तरीक़ और दुआ को स्वीकार कराने का तरीक़ और गुनाहों से पवित्र होने का तरीक़। आजकल यह प्रश्न बड़ा आम किया जाता है कि हमें किस तरह पता चले कि हमारे गुनाह माफ़ हो गए और अल्लाह तआला हम से प्रसन्न है। यहां इस बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक उसूली बात भी वर्णन फ़र्मा दी कि यदि अल्लाह तआला से वास्तविक सम्बन्ध क़ायम हो जाता है जो मुस्तक़िल सम्बन्ध है, जिस के लिए इन्सान ने वास्तविक कोशिश की है तो फिर अल्लाह तआला का ऐसा फ़ज़ल होता है जो उसे बुराइयों से बचने की शक्ति अता फ़रमाता है और न केवल यह कि बुराइयों से इन्सान बचता है बल्कि नेकियां करने और मुस्तक़िल नेकियां करने की क़ुव्वत अता होती है। यदि यह नहीं तो इन्सान यह नहीं कह सकता कि मैंने अल्लाह तआला का प्रेम प्राप्त कर लिया है। अत: वास्तविक इबादत करने वाला इन्सान उस वक़्त बन सकता है जब इस ढ़ंग पर सोचने वाला हो और इसके अनुसार कर्म करने वाला हो और इसके लिए हमें इस रमज़ान में कोशिश भी करनी चाहिए।

दुआ के हवाले से जैसा कि मैंने कहा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुछ बातें आपके सामने पेश करूँगा। दुआओं की स्वीकार्यता के विषय को वर्णन फ़रमाते हुए एक अवसर पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "दुआ की स्वीकार्यता का मसला वास्तव में दुआ के मसला की एक शाख है और यह क़ायदे की बात है कि जिस व्यक्ति ने असल को समझा हुआ नहीं होता उस को शाख के समझने में पेचीदगियां होती हैं और धोखे लगते हैं।" किसी चीज़ को समझने के लिए उस की बुनियाद को समझने की ज़रूरत है। यदि वह बुनियादी चीज़ नहीं समझ आ रही तो जितने मर्ज़ी उसके नुकात हों, व्याख्याएँ हों, विस्तार के साथ वर्णन हो वे समझ नहीं आ सकते। फ़रमाया कि "... दुआ की आकृति यह है कि एक सईद बंदा और उसके रब में एक सम्बन्ध आकर्षण का है।" अर्थात खीचनें का एक सम्बन्ध है। "अर्थात पहले ख़ुदा तआला की रहमानियत बंदा को अपनी तरफ़ खींचती है फिर बंदा के सिदक़ की कशिशों से ख़ुदा तआला उससे नज़दीक हो जाता है।" यदि बंदे की सच्चाई और सच्चे दिल से कोशिशें होंगी तो फिर ख़ुदा तआला बंदे के नज़दीक हो जाता है। "और दुआ की हालत में वह सम्बन्ध एक विशेष स्थान पर पहुंच कर अपने विचित्र विशेषताएँ पैदा करता है ।" अजीब-ओ-ग़रीब किस्म की विशेषताएं ज़ाहिर होते हैं। "अत: जिस वक़्त बंदा किसी सख़्त मुश्किल में ग्रस्त हो कर ख़ुदा तआला की और कामिल यक़ीन और कामिल उम्मीद और कामिल मुहब्बत और कामिल वफ़ादारी और कामिल हिम्मत के साथ झुकता है और निहायत दर्जा का बेदार हो कर ग़फ़लत के पर्दों को चीरता हुआ फ़ना के मैदानों में आगे से आगे निकल जाता है। फिर आगे क्या देखता है कि ख़ुदा का दरबार है और उस के साथ कोई शरीक नहीं। तब उसकी रूह उस के समक्ष सिर रखती है।'' केवल उस को ख़ुदा ही ख़ुदा नज़र आता है। हर चीज़ नज़र से ग़ायब हो जाती है। दुनिया की कोई हैसियत उस के सामने नहीं रहती। किसी भी चीज़ की कोई हैसियत नहीं रहती। ऐसी हालत पैदा होती है कि केवल ख़ुदा होता है और जब ख़ुदा को देखता है तो उसके आस्ताने पर फिर उसकी रूह सिर रख देती है''और आकर्षण की शक्ति जो उसके अंदर रखी गई है वह ख़ुदा तआला की कृपा को अपनी तरफ़ खींचती है।" बंदे के अंदर भी जज़्ब करने की एक क़ुव्वत रखी गई है वह अल्लाह तआला की जो कृपा हैं उनको खीचना शुरू कर देती है।'' तब अल्लाह उस काम के पूरा करने की तरफ़ मुतवज्जा होता है और इस दुआ का प्रभाव उन समस्त ज़ाहिरी वस्तुओं पर डालता है।'' जो भी बुनियादी अस्बाब इस काम को करने के लिए ज़रूरी हैं, जो चीज़ें भी ज़रूरी हैं, जो सामाग्री भी ज़रूरी हैं उन पर अल्लाह तआला अपना प्रभाव डालता है। "जिनसे ऐसे अस्बाब पैदा होते हैं जो इस अर्थ के प्राप्त होने के लिए ज़रूरी हैं। उदहारणता यदि बारिश के लिए दुआ है तो दुआ के बाद की स्वीकार्यता के वे प्रकिर्तिक कारण जो बारिश के लिए ज़रूरी होते हैं इस दुआ के प्रभाव से पैदा किए जाते हैं और यदि क़हत के लिए बददुआ है तो क़ादिर ए मुतलक़ विपरीत कारणों को पैदा कर देता है।"

फिर फ़रमाया कि "जिस क़दर हज़ारों चमत्कार अनबया से प्रकट में आए हैं या जो कुछ कि औलिया ए किराम उन दिनों तक विचित्र चमत्कार दिखलाते रहे उसका असल और उद्गम स्रोत यही दुआ है और अधिकतर दुआओं के प्रभाव से ही तरह तरह के सर्व शक्तिमान ख़ुदा के तमाशे दिखला रहे हैं।"
(बर्कातुत दुआ, रुहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 9-10)

क़ुरआन शरीफ़ भी बेशुमार भविष्यवाणियों से भरा हुआ है। इसके अतिरिक्त हम देखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के युग में भी बहुत भविष्यवाणियां पूरी हुईं, बहुत सारी बातें पूरी हुईं, बहुत नेक लोगों को नेक ख़्वाबें आती हैं और पूरी होती हैं, दुआओं के प्रभाव ज़ाहिर होते हैं। तो यह सारी बातें उसी सूरत में होती हैं जब ख़ालिस हो कर बंदा अल्लाह तआला के समक्ष झुकता है। फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मज़ीद विस्तार करते हुए फ़रमाते हैं कि "अल्लाह तआला फ़रमाता है وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अन्कबूत : 70) जो हमारी राह में मुजाहिदा करेगा हम उसको अपनी राहें दिखला देंगे।'' मुजाहिदा पहले बंदे के ज़िम्मा डाला। तुमने मुजाहिदा करना है।'' यह वह वादा है और इधर यह दुआ है कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ(अल् फ़ातिहा : 6)''अल्लाह तआला ने यह वादा किया कि मुजाहिदा करो मैं तुम्हें अपनी राह दिखलाऊँगा। दूसरी तरफ़ यह दुआ भी सिखला दी कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ कि हमें सद मार्ग की तरफ़ आदेश दे। "अत: इन्सान को चाहीए कि इस को दृष्टिगत रखकर नमाज़ में रो रो कर दुआ करे।'' गिड़गिड़ा कर दुआएं करे'' और इच्छा रखे कि वह भी उन लोगों में से हो जाए जो तरक़्क़ी और बसीरत प्राप्त कर चुके हैं। ऐसा न हो कि इस संसार से बिना बसीरत के और अंधा उठाया जाए। इसलिए फ़रमाया। مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ

فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ(बनी इसराईल : 73) कि जो इस संसार में अंधा है वह उस संसार में भी अंधा है।''(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 20 प्रकाशन लंदन) अर्थात रुहानी लिहाज़ से अंधा है। जो इस संसार में दुनिया में डूबा हुआ जिस ने अल्लाह तआला को नहीं पहचाना, जिस ने दुआओं की हिक्मत को नहीं पहचाना, जिसने दुआओं के प्रभाव को नहीं पहचाना और दुनिया में डूबा हुआ है वह फिर अगले संसार में भी अल्लाह तआला का प्रेम नहीं पा सकता। अत: आप फ़रमाते हैं कि आख़िरत की तैयारी इस दुनिया से होनी चाहिए उसकी तैयारी करो फ़रमाया कि "उद्देश्य यह है कि इस संसार के मुशाहिदा के लिए इसी संसार से हमको आँखें ले जानी हैं।'' अगले संसार को अल्लाह तआला का प्रेम पाने वाले संसार को यदि देखना है तो फिर उसी संसार से हमें उसको देखने के लिए आँखें ले जानी होंगी। "अगले संसार को महसूस करने के लिए ज्ञानेन्द्रियों की तैयारी इसी संसार में होगी। अत: क्या यह विचार हो सकता है कि अल्लाह तआला वादा करे और पूरा न करे।'' फ़रमाया कि "अंधे से मुराद वह है जो रुहानी मआरिफ़ (अध्यात्म ज्ञान) और रुहानी आनन्द से ख़ाली है। एक व्यक्ति केवल देखा-देखी से कि मुस्लमानों के घर में पैदा हो गया।" अंधी अनुसरण हो रहा है। इस बात पर केवल अंधा ईमान है, अंधी तक़लीद है, अनुसरण कर रहा है, कर्म कोई नहीं केवल अंधी पैरवी है कि मुस्लमानों के घर में पैदा हो गया इसलिए मैं मुस्लमान हूँ।" मुस्लमान कहलाता है। दूसरी तरफ़ इसी तरह एक ईसाई ईसाइयों के हाँ पैदा हो कर ईसाई हो गया। यही वजह है कि ऐसे व्यक्ति को ख़ुदा, रसूल और क़ुरआन की कोई इज़्ज़त नहीं होती। उस की दीम से मुहब्बत भी काबुल-ए-एतराज़ है।" जो अंधा अनुसरण कर रहा है उस का धर्म से मुहब्बत भी काबिल -ए-एतराज़ है। "ख़ुदा और रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान करने वालों में उस का गुज़र होता है। इस की वजह केवल यह है कि ऐसे व्यक्ति की रुहानी आँख नहीं। उस में मुहब्बत-ए-दीन नहीं। अन्यथा मुहब्बत करने वाला अपने महबूब के विरुद्ध क्या कुछ पसंद करता है?" यदि मुहब्बत हो तो मुहब्बत करने वाला अपने महबूब के ख़िलाफ़ कुछ नहीं पसंद करता। "उद्देश्य अल्लाह तआला ने सिखलाया है कि मैं तो देने को तैयार हूँ यदि तू लेने को तैयार है। अत: यह दुआ करना ही इस आदेश को लेने की तैयारी है।" (मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 20 प्रकाशन 1984 ई.)

अत: इन दिनों में यह दुआ बहुत करें कि اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ। अल्लाह तआला हमें सीधे रास्ते पर चलाए। दिलों को भी पवित्र करे। वास्तविक इबादत करने वाला बनाए और अल्लाह तआला के बंदों का हक़ अदा करने वाला भी बनाए। न कि आजकल जिस तरह शिद्दत-पसंद कर रहे हैं उनकी तरह हो जाएं। ख़ुदा और रसूल के नाम पर ज़ुलम किए जा रहे हैं। अल्लाह तआला ऐसे ज़ालिमों के छल से भी हर एक को बचाए।

कुछ लोग कह देते हैं कि हम तो इस क़दर गुनाह-गार हो गए हैं कि अब ख़ुदा तआला हमें क्षमा नहीं करेंगा। प्रश्न भी कुछ पूछ लेते हैं कि कितना गुनाह-गार आदमी बख़्शा जा सकता है और फिर और इस बात पर कि हम बख़्शे नहीं जाऐंगे मज़ीद गुनाहों में ग्रस्त होते चले जाते हैं। असल में तो शैतान उनके दिलों में एक भ्रम डाल रहा होता है। ख़ुदा तआला से दूर करने के लिए शैतान अपने अस्त्र प्रयोग कर रहा होता है और ऐसे लोग फिर शैतान के हाथों में खेलते रहते हैं लेकिन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें शैतान के इस हमले और चंगुल से निकलने का तरीक़ वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि

"गुनाह करने वाला अपने गुनाहों की अत्याधिकता इत्यादि का ख़्याल करके दुआ से कदापि पीछे न रहे।" कदापि न रुको कि बहुत गुनाह हो गए हैं। फ़रमाया कि "दुआ तिरयाक़(ज़हर को काटने वाली औषधि) है। आख़िर दुआओं से देख लेगा कि गुनाह उसे कैसा बुरा लगने लगा।'' दुआ ही तो गुनाहों से बचने का ईलाज है। जब मुस्तक़िल मिज़ाजी से दुआ करोगे तो देखोगे कि गुनाह भी उसे बुरा लगने लगेगा। शैतान दौड़ जाएगा।'' जो लोग नास्तिकता में डूब कर दुआ की स्वीकृति से मायूस रहते हैं और तौबा की तरफ़ ध्यान नहीं करते आख़िर वे नबियों और उनके प्रभावों के इन्कार करने वाले हो जाते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 4-5 प्रकाशन 1984 ई.)

फिर वे दीन से हट जाते हैं। ऐसे लोग दीन से दूर हो जाते हैं और फिर नबियों से दूर होते होते, दीन से हटते हटते नास्तिकता तक पहुंच जाते हैं। अत: इस्लाम ऐसे लोगों को भी उम्मीद की किरण दिखलाता है जो गुनाहों में डूबे हुए हैं और इसलिए यही अवसर पैदा करने के लिए कि किस तरह गुनाहों से तौबा करनी है, वह माहौल पैदा करने के लिए अल्लाह तआला हर वर्ष हमें यह रमज़ान का महीना दिखाता है। अत: इस महीने से फ़ायदा उठाना चाहिए। अपने एक इलहाम का वर्णन करते हुए कि أُجِيبُ كُلَّ دُعَائِكَ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "मेरे साथ मेरे ख़ुदा का स्पष्ट वादा है कि أُجِيبُ كُلَّ دُعَائِكَ। परन्तु में ख़ूब समझता हूँ कि كُلَّ से मुराद यह है कि जिनके न सुनने से हानी पहुंचती है।'' मैं समझता हूँ कि हर दुआ से यह मुराद नहीं कि हर दुआ सुनी जाएगी लेकिन यदि كُلَّ से मुराद यह है कि वे दुआएं जिनके न सुनने से हानी पहुंचती है।'' लेकिन यदि अल्लाह तआला तर्बीयत और इस्लाह चाहता है तो रद्द करना ही दुआ का स्वीकार होना होता है। कभी कबार इन्सान किसी दुआ में नाकाम रहता है और समझता है कि ख़ुदा तआला ने दुआ रद्द कर दी हालाँकि ख़ुदा तआला उसकी दुआ को सुन लेता है और वह स्वीकार्यता रद्द की अवस्था में ही होती है क्योंकि उसके लिए पर्दे के पीछे और वास्तव में बेहतरी और भलाई उस के रद्द ही में होती है। इन्सान चूँकि भविष्य से अज्ञान है और दूर-अँदेश नहीं बल्कि ज़ाहिर परस्त है इसलिए उसको उचित है कि जब अल्लाह तआला से कोई दुआ करे और वह वास्तव में उसके लाभदायक परिणाम न हो तो ख़ुदा पर बुरी धारणा न हो कि उसने मेरी दुआ नहीं सुनी। वह तो हर एक की दुआ सुनता है।اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (उल-मोमिन61) फ़रमाता है। रहस्य और भेद यही होता है कि दुआ करने वाले के लिए ख़ैर और भलाई दुआ की अस्वीकार्यता ही में होती है।''(मल्फ़ूज़ात भाग 1पृष्ठ 106) अर्थात दुआ करने वाले के लिए ख़ैर और भलाई इसी में है कि दुआ न सुनी जाए।

फिर इसी बात का और विस्तार करते हुए आप फ़रमाते हैं कि "दुआ का उसूल यही है अल्लाह तआला दुआ की स्वीकार्यता में हमारे आदेश और ख़्वाहिश के अधीन नहीं होता। देखो बच्चे किस क़दर अपनी माओं को प्यारे होते हैं और वह चाहती है कि उनको किसी किस्म की तकलीफ़ न पहुंचे लेकिन यदि बच्चे बेहूदा तौर पर विवश करें और रो कर तेज़ चाक़ू या आग का रोशन और चमकता हुआ अंगारा मांगें तो क्या माँ बावजूद सच्ची मुहब्बत और वास्तविक दिल से प्रेम के कभी गवारा करेगी कि उसका बच्चा आग का अंगारा लेकर हाथ जला ले या चाक़ू की तेज़ धार पर हाथ मार कर हाथ काट ले। कदापि नहीं। इसी उसूल से दुआ के स्वीकार होना का उसूल समझा जा सकता है।'' फ़रमाया कि "मैं ख़ुद इस बात में एक अनुभव रखता हूँ कि जब दुआ में कोई भाग हानिकारक होता है तो वह दुआ कदापि स्वीकार नहीं होती है।'' यह नहीं कि सारी दुआएं मेरी स्वीकार हो गईं। अल्लाह तआला बेहतर जानता है यस को भविष्य का इलम है। जब कोई बात इस दुआ में हानिकारक होती है, नुक़्सानदेह होती है तो मेरी वह दुआ स्वीकार नहीं होती। फ़रमाया कि "यह बात ख़ूब समझ में आ सकती है कि हमारा इलम यक़ीनी और सही नहीं होता। बहुत से काम हम निहायत ख़ुशी से मुबारक समझ कर करते हैं और अपने ख़्याल में उनका परिणाम बहुत ही मुबारक ख़्याल करते हैं परन्तु अंजाम-कार वह एक ग़म और मुसीबत हो कर चिमट जाता है।"

इसकी बहुत सारी उदाहरण आजकल भी हम देखते हैं। रोज़ाना की डाक में मैं ने देखा है लोगों के पत्र आते हैं कि दुआ करते हैं और फिर ज़बरदस्ती एक काम को करने के लिए कोशिश भी करते हैं फिर उसके परिणाम बेहतर नहीं निकलते तो फिर अल्लाह तआला से शिकवा होता है और समझते हैं कि हमने दुआ भी बहुत की थी और बड़ा सदक़ा ख़ैरात देकर यह काम शुरू किया था फिर भी इस का नतीजा नेक नहीं निकला या हमारी वह दुआ स्वीकार नहीं हुई। पहली बात तो यह है कि यह भी देखने वाली बात है कि दुआ को जो इंतिहा तक पहुंचाने वाली बात है वह पहुंचाई? अल्लाह तआला से जो सम्बन्ध क़ायम करना चाहिए वह हुआ? यदि नहीं तो फिर तो ज़बानी जमा ख़र्च ही है जिस तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। और यदि दुआ को इंतिहा तक पहुंचा दिया था और फिर अल्लाह तआला ने इस काम को रद्द कर दिया या उसके परिणाम नहीं निकले तो फिर ये अल्लाह तआला की हिक्मत थी। इसी में इन्सान का फ़ायदा था और यदि ग़लती की वजह से इन्सान ज़ोर देता है तो फिर इन्सान को बजाय अल्लाह तआला पर शिकवा करने के अस्तग़फ़ार करना चाहिए कि मेरे से ग़लती हुई और में इस बात पर ज़्यादा ज़ोर देता रहा जो मेरे हक़ में नहीं थी बात। कुछ ऐसे भी हैं जिन्होंने दुआ की कि अल्लाह तआला स्वीकार कर ले। यदि बेहतर नहीं है तब भी स्वीकार कर ले। कुछ रिश्तों में भी ऐसा हुआ। अल्लाह तआला ने उसकी दुआ सुन ली, रिश्ता हो गया जहां वह पसंद करता था और इसके कुछ अरसा बाद अलैहदगी भी हो गई तो ऐसी दुआएं फिर करनी भी नहीं चाहिऐं। कई दफ़ा अल्लाह तआला सबक़ देने के लिए भी इन्सान को सिखा देता है। उसकी कुछ दुआएं स्वीकार कर लेता है जो उस के हक़ में अच्छी नहीं होतीं लेकिन फिर नतीजा जब सामने आता है तो फिर वह तौबा अस्तग़फ़ार करता है।

बहरहाल आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "उद्देश्य यह कि इन्सानी की

ख़ाहिशात सब पर सादिर नहीं कर सकते कि सब सही हैं। चूँकि इन्सान भूल चूक का पुतला है।" गलतियाँ होती हैं इन्सान से "इस लिए होना चाहीए और होता है कि कुछ ख़ाहिश हानिकारक होती है और यदि अल्लाह तआला उस को मंज़ूर कर ले तो यह विषय रहमत के स्पस्ट विरुद्ध है।" कुछ खावाहिशत हानिकारक भी होती है। यदि अल्लाह तआला का सही प्यारा बंदा है तो अल्लाह तआला फिर उस दुआ को उसके लिए स्वीकार नहीं करता क्योंकि यह बात उसकी रहमत के मन्सब के ख़िलाफ़ है। अपने प्यारों को कभी इस तरह से नुक़्सान नहीं पहुँचवाता। फ़रमाया कि "यह एक सच्ची और यक़ीनी बात है कि अल्लाह तआला अपने बंदों की दुआओं को सुनता है और उनको स्वीकृति का शरफ़ प्रदान करता है परन्तु हर किसी को नहीं।'' हर व्यक्ति के लिए नहीं है'' क्योंकि नफ़्स के जोश के कारण से इन्सान परिणाम और कर्मों को नहीं देखता और दुआ करता है।" फ़िक्र ही नहीं होती उसको कि इस के क्या परिणाम निकलने हैं। "परन्तु अल्लाह तआला जो वास्तविक भलाई चाहने वाला है इन नुकसान पहुचने वाले और बुरे परिणाम को समक्ष रख कर जो इस दुआ के अधीन स्वीकार होने की अवस्था में दुआ करने वाले को पहुंच सकते हैं उसे रद्द कर देता है और यह दुआ के अस्वीकार होना ही उस के लिए दुआ का स्वीकार होना होता है।" अपने क़रीबियों के लिए तो ख़ुदा तआला का यह उसूल है।'' अत: ऐसी दुआएं जिनमें इन्सान हवादिस और सदमात से सुरक्षित रहता है। अल्लाह तआला स्वीकार कर लेता है परन्तु हानिकारक दुआओं को बसूरत रद्द स्वीकार फ़र्मा लेता है।'' फ़रमाया कि "मुझे यह इल्हाम बार बार हो चुका है।" जैसा कि पहले वर्णन हुआ कि "اُجِيْبُ كُلَّ دُعَائِكَ दूसरे शब्दों में यूं कहो कि हर एक ऐसी दुआ जो नफ़्स-उल-अमर में लाभदयक और मुफ़ीद है स्वीकार की जाएगी।'' आपने उसकी यह व्याख्या फ़रमाई कि जो लाभदायक दुआ है वह स्वीकार की जाएगी। फ़रमाया कि "मैं जब इस ख़्याल को अपने दिल में पाता हूँ तो मेरी रूह आनन्द और ख़ुशी से भर जाती है। जब मुझे यह प्रथम ही प्रथम अल्हाम हुआ क़रीबन पच्चीस या तीस वर्ष का समय होता है तो मुझे बहुत ही ख़ुशी हुई कि अल्लाह तआला मेरी दुआएं जो मेरे या मेरे लोगों के विषय में होंगी ज़रूर स्वीकार करेगा। फिर मैंने ख़्याल किया कि इस मुआमला में कंजूसी नहीं होना चाहीए क्योंकि यह एक इनाम ए इलाही है और अल्लाह तआला ने मुत्तक़ीन की विशेषताओं में फ़रमाया है وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ (अल्बक़रा : 4) अत: मैंने अपने दोस्तों के लिए यह उसूल कर रखा है कि ख़ाह वे याद दिलाएँ या न याद दिलाएँ कोई बड़ा कार्य पेश करें या न करें।" मुश्किल विषय पेश करें या न करें।'' उनकी दीनी और दुनयावी भलाई के लिए दुआ की जाती है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 106 से 108 प्रकाशन 1984 ई.)

दुआओं की स्वीकार्यता की शर्तों के बारे में वज़ाहत करते हुए आप ने फ़रमाया "यह बात भी दिल से सुन लेनी चाहीए कि दुआ के स्वीकार होने के लिए भी कुछ शर्ते होती हैं। उनमें से कुछ तो दुआ करने वाले के विषय में होती हैं और कुछ दुआ करवाने वाले के विषय में। दुआ करवाने वाले के लिए ज़रूरी होता है कि वह अल्लाह तआला के भय और डर को दृष्टिगत रखे।" यह बड़ी महत्वपूर्ण बात है । जो दुआ के लिए कहने वाला है उसके लिए भी ज़रूरी है कि वह हमेशा अल्लाह तआला के भय और डर को सामने रखे "और उस के गिनाए ज़ाती से हर वक़्त डरता रहे।" याद रखें कि अल्लाह तआला निस्पृह है। हर वक़्त अल्लाह तआला का भय होना चाहिए उसके दिल में। "और सुलह कारी और ख़ुदा-परस्ती अपना दस्तूर बना लें।" यह ज़रूरी चीज़ें हैं। सुलह कारी और ख़ुदा-परस्ती अपना दस्तूर बनाए।'' तक़्वा और रास्तबाज़ी से ख़ुदा तआला को ख़ुश करे तो ऐसी सूरत में दुआ के लिए स्वीकार्यता का मार्ग खोला जाता है।" जब ऐसी सूरत पैदा हो जाएगी ये सारी शर्तें पूरी होंगी तो अल्लाह तआला फिर दुआ की स्वीकृति का दरवाज़ा खौलता है "और यदि वह ख़ुदा तआला को नाराज़ करता है और उससे बिगाड़ और जंग क़ायम करता है।" अल्लाह तआला के हुक्मों पर नहीं चलता, अल्लाह के हुक़ूक़ और लोगों के हुक़ूक़ की अदायगी भी नहीं करता तो फ़रमाया "तो उसकी शरारतें और ग़लत कार्य दुआ की राह में एक रोक और चट्टान हो जाती हैं।" दीवार बन जाएँगी, रोक बन जाएँगी, चट्टान की तरह खड़ी हो जाएँगी "और स्वीकार्यता का दरवाज़ा उसके लिए बंद हो जाता है।" उसके लिए दुआओं की स्वीकार्यता का दरवाज़ा बंद हो जाता है। न उसकी अपनी दुआएं स्वीकार होती हैं न जिससे वह दुआ करवा रहा है उसकी दुआएं उस के हक़ में स्वीकार होती हैं। फ़रमाया'' अत: हमारे दोस्तों के लिए अनिवार्य है कि वे हमारी दुआओं को ज़ाए होने से बचाएं और उनकी राह में कोई रोक न डाल दें जो उनकी अनुचित हरकात से पैदा हो सकती हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 108 प्रकाशन 1984 ई.)

यदि यह कर्म सही नहीं हैं तो फिर मेरी दुआएं भी तुम्हारे हक़ में स्वीकार नहीं होंगी बल्कि तुम्हारे कर्म उनकी स्वीकार्यता के रस्ते में रोक बन जाऐंगे।

फिर दुआ की स्वीकार्यता के लिए यह भी ज़रूरी है कि एतिक़ादी लिहाज़ से इन्सान मज़बूत हो।यह बुनियादी शर्त है। और अच्छे कर्म करने वाला हो। अच्छे कर्म का पहले भी वर्णन आ गया जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि मेरी बातों पर लब्बैक कहो। मेरी मानो। अल्लाह तआला की बातों का मुसबत उत्तर देना, उन पर कर्म करना यही एक बुनियादी चीज़ है जो फिर दुआओं की स्वीकार्यता के लिए ज़रूरी है। इस बात की वज़ाहत करते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "यह सच्ची बात है कि जो व्यक्ति आमाल (कर्मों) से काम नहीं लेता वह दुआ नहीं करता बल्कि ख़ुदा तआला की परीक्षा लेता है। इसलिए दुआ करने से पहले अपनी समस्त शक्तियों को ख़र्च करना ज़रूरी है और यही अर्थ इस दुआ के हैं। पहले आवश्यक है कि इन्सान अपने एतिक़ाद। आमाल (कर्मों) में नज़र करे क्योंकि ख़ुदा तआला की आदत है कि इस्लाह माध्यमों के अंतर्गत होती है। "सामान मुहय्या होंगे जो इस्लाह के लिए ज़रूरी हैं, अपनी हालतें दरुस्त करोगे, दरुस्त करने की कोशिश करोगे तो फिर इस्लाह भी होगी। फ़रमाया कि "वह कोई न कोई ऐसा माध्यम पैदा कर देता है कि जो इस्लाह का कारण हो जाता है।" यदि दुआ सच्चे दिल से की जा रही है तो अल्लाह तआला फिर ऐसा माध्यम पैदा कर देता है जो इस्लाह का कारण बन जाता है। "वो लोग इस स्थान पर ज़रा विशेष ग़ौर करें जो कहते हैं कि जब दुआ हुई तो माध्यमों की क्या ज़रूरत है। वे नादान सोचें कि दुआ बजाए ख़ुद एक गुप्त माध्यम है।'' जो दुआ करना है वह भी तो एक माध्यम, है नाँ'' जो दूसरे माध्यमों को पैदा कर देता है और اِيَّاكَ نَعْبُدُ کا تقدم اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ (फ़ातिहा : 5) पर जो दुआ के शब्द हैं इस बात की विशेष तशरीह कर रहा है।'' कि हम तेरी इबादत करते हैं और फिर तुझसे मदद चाहते हैं कि हमारे काम हो जाएं। इस बात की विशेष तशरीह कर रहा है। "उद्देश्य ख़ुदा का कार्य हम यूंही देख रहे हैं कि वो माध्यम पैदा कर देता है।" माध्यम पैदा कर देता है इन्सान के लिए। "देखो प्यास के बुझाने के लिए पानी और भूक के मिटाने के लिए खाना मुहय्या करता है परन्तु माध्यमों के द्वारा।" यह नहीं है कि यूंही प्यास बुझ गई या पानी वैसे ही आसमान से एक दम जादू की तरह आ गया या खाना उपलब्ध हो गया। माध्यम पैदा होते हैं, ज़रिए पैदा होते हैं जिनके द्वारा से पानी भी मिलता है और खाना भी मिलता है।'' अत: यह माध्यमों का सिलसिला यूंही चलता है और माध्यम अवश्य पैदा होते हैं क्योंकि ख़ुदाए तआला के यह दो नाम ही हैं। كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا (निसा : 159) अज़ीज़ तो यह है कि हर एक काम कर देना और हकीम यह कि हर एक काम किसी हिक्मत से अवसर और समय के अनुसार और उचित कर देना। देखो पेड़ पोधे, कीड़ों में अलग अलग प्रकार की वशेषताएँ हैं। तुर्बुद ही को देखो कि वह एक दो तौला तक दस्त (पतला शौच) ले आती है, ऐसा ही सकमोनिया। अल्लाह तआला इस बात पर तो क़ादिर है कि यूंही दस्त आजाए या प्यास बिना पानी ही के बुझ जाए।" अल्लाह तआला की क़ुदरत है कि पेट खोल दे और पानी के बग़ैर प्यास बुझ जाए। "परन्तु चूँकि चमत्कार-ए-क़ुदरत का इलम कराना भी ज़रूरी था।'' अल्लाह तआला ने जो चीज़ें पैदा की हैं यह चमत्कार हैं क़ुदरत के उनका ज्ञान कराना भी ज़रूरी था। "क्योंकि जिस क़दर वाक़्फ़ीयत और इलम चमत्कार-ए-क़ुदरत का वसीअ होता जाता है उसी क़दर इन्सान अल्लाह तआला की सिफ़ात पर इत्तिला पा कर क़ुरब प्राप्त करने के काबिल होता जाता है। वैद्यक, खगोल विद्या से हज़ारों विशेषताएँ मालूम होती हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 124-125 प्रकाशन 1984 ई.)

यदि इन्सान की रुहानी आँख देखे तो यह जो चीज़ें पैदा की गई हैं एक एकेश्वरवादी विज्ञानिक जो है, अल्लाह तआला को मानने वाला विज्ञानिक जो है वह हर खोज पर या हर चीज़ को देख कर उस पर ग़ौर करके अल्लाह तआला के होने का एक सबूत प्राप्त करता है और उसका ईमान बढ़ता है लेकिन नास्तिक चाहे उसको इत्तिफ़ाक़ कह देता है लेकिन बहरहाल फ़रमाया कि यह प्रकिरती के चमत्कार अल्लाह तआला ने दिखाए ही इसलिए हैं ता कि इन्सान को पता लगे कि हर चीज़ का एक उद्देश्य है।

फिर आप फ़रमाते हैं कि "चाहीए कि वह तक़्वा की राह पर चलें क्योंकि तक़्वा ही एक ऐसी चीज़ है जिसको शरीयत का सारांश कह सकते हैं और यदि शरीयत को मुख़्तसिर तौर पर वर्णन करना चाहें तो शरीयत का मग़ज़ तक़्वा ही हो सकता है। तक़्वा के दर्जे और स्टेज बहुत हैं लेकिन यदि सच्चाई की खोज करने वाला बन कर आरंभिक दर्जों में और मराहिल को इस्तिक़लाल और ख़ुलूस से तै करे तो वह इस रास्ती और सच्चा

होने के कारण से आला मदारिज को प्राप्त कर लेता है। अल्लाह तआला फ़रमाता है। اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ (अल्मायदा 28) यद्यपि अल्लाह तआला मुत्तक़ियों की दुआओं को स्वीकार फ़रमाता है।" اِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ "यह जबकि उसका वादा है और उसके वादों में वादा तोड़ना नहीं होती। जैसा कि फ़रमाया है اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ (अल् राअद 32) "अल्लाह तआला वादा तोड़ा नहीं करता। اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ "अत: जिस हाल में तक़्वा की शर्त दुआओं की स्वीकार्यता के लिए एक न अलग होने वाली शर्त है।" ऐसी शर्त है जिसे अलग नहीं किया जा सकता, छोड़ा नहीं जा सकता, रद्द नहीं किया जा सकता।'' तो एक इन्सान ग़ाफ़िल और भटक कर यदि क़ुबूलियत-ए- दुआ चाहे तो क्या वह अहमक़ और नादान नहीं है। इस लिए हमारी जमात को लाज़िम है कि जहां तक मुम्किन हो हर एक उनमें से तक़्वा की राहों पर क़दम मारे ताकि क़ुबूलियत-ए-दुआ का आनंद और सौभाग्य प्राप्त करे और ज़्यादती ईमान का हिस्सा ले।" (मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 108-109 प्रकाशन 1984 ई.)

अल्लाह तआला ने फ़रमाया मेरे पर ईमान भी लाओ। इसी तरह ईमान बढ़ेगा।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रहम की किस्में वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं "यह याद रहे कि रहम दो किस्म का होता है एक रहमानियत दूसरा रहीमियत के नाम से मौसूम है। रहमानियत तो ऐसा फ़ैज़ान है कि जो हमारे वजूद और हस्ती से भी पहले ही शुरू हुआ। मसलन अल्लाह तआला ने पहले-पहल अपने इलम-ए-क़दीम से देख कर इस किस्म का ज़मीन और आसमान और पृथिव की वस्तुएं और आकाश की वस्तुएं ऐसी पैदा की हैं जो सब हमारे काम आने वाली हैं और काम आती हैं। और उन सब वस्तुओं से इन्सान ही आम तौर पर फ़ायदा उठाता है। भेड़ बकरी और अन्य जानवर जबकि बजाए ख़ुद इन्सान के लिए मुफ़ीद वस्तु हैं तो वह क्या फ़ायदा उठाते हैं?" यह सब चीज़ें तो इन्सान के लाभ के लिए बनाई गई हैं। उन्होंने क्या फ़ायदा उठाना है। "देखो जस्मानी विषय में इन्सान कैसी-कैसी लतीफ़ और आला दर्जा के आहार खाता है। आला दर्जा का गोश्त इन्सान के लिए है। टुकड़े और हड्डियां कुत्तों के वास्ते। जस्मानी तौर पर जो आनंद और सहूलत इन्सान को प्राप्त हैं जबकि हैवान भी इस में शरीक हैं परन्तु इन्सान को वह उच्चतम स्थान प्राप्त हैं और रुहानी लज़्ज़ात में जानवर शामिल भी नहीं हैं।" रुहानी लज़्ज़ात जो हैं वह तो केवल इन्सान के लिए हैं। जानवर तो इस में शरीक ही नहीं। "अत: यह दो किस्म की रहमतें हैं। एक वह जो हमारे वजूद से पहले समय से पूर्व के तौर पर तक़्दिमा की सूरत में''अर्थात पहले ही तैयार करके रखी गई हैं,'' कई प्रकार के तत्व इत्यादि वतुएँ पैदा कीं जो हमारे काम में लगी हुई हैं और यह हमारे वजूद, ख़ाहिश और दुआ से पहले हैं।" हमारे पैदा होने से भी पहले की चीज़ें हैं। हमारी ख़ाहिश से भी पहले से ही यह मौजूद हैं। हमारी दुआ मांगने से भी पहले से ही मौजूद हैं।'' जो रहमानियत के तक़ाज़े से पैदा हुए।'' यह सारी चीज़ें अल्लाह तआला की रहमानियत की वजह से पैदा हुई हैं।

"और दूसरी रहमत रहीमियत की है। अर्थात जब हम दुआ करते हैं तो अल्लाह तआला देता है। ग़ौर किया जाए तो मालूम होगा कि कानून -ए-क़ुदरत का सम्बन्ध हमेशा से दुआ का सम्बन्ध है। कुछ लोग आजकल इसको बिद्दत समझते हैं। हमारी दुआ का जो सम्बन्ध ख़ुदा तआला से है मैं चाहता हूँ कि उसे भी वर्णन करूँ।"

फ़रमाया "एक बच्चा" अर्थात एक इन्सान का दुआ से जो सम्बन्ध है वह वर्णन किया।'' एक बच्चा जब भूक से बेताब हो कर दूध के लिए चिल्लाता और चीखता है तो माँ के स्तनों में दूध जोश मारकर आ जाता है। बच्चा दुआ का नाम भी नहीं जानता लेकिन उसकी चीख़ें दूध को क्योंकर खींच लाती हैं? इस का हर एक को तजुर्बा है कभी कबार देखा गया है कि माएं दूध को महसूस भी नहीं करतीं परन्तु बच्चा की चिल्लाहट है कि दूध को खींचे लाती है। तो क्या हमारी चीख़ें जब अल्लाह तआला के हुज़ूर हूँ तो वे कुछ भी नहीं खींच कर ला सकतीं? आता है और सब कुछ आता है परन्तु आँखों के अंधे जो फ़ाज़िल और फिलासफर बने बैठे हैं बे देख नहीं सकते। बच्चा को जो मुनासबत माँ से है इस सम्बन्ध और रिश्ता को इन्सान अपने ज़हन में रख कर यदि दुआ की फ़िलोसफ़ी पर ग़ौर करे तो वह बहुत आसान और सहल मालूम होती है। दूसरी किस्म का रहम यह शिक्षा देता है कि एक रहम मांगने के बाद पैदा होता है। मांगते जाओगे मिलता जाएगा। اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (मोमिन : 61) कोई लफ़्फ़ाज़ी नहीं बल्कि यह मनुष्य की सृष्टि का एक अनिवार्य भाग है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 128 से 130 प्रकाशन 1984 ई.)

फिर इस बात की महत्ता को वर्णन फ़रमाते हुए कि माँगना इन्सान का विशेषता है और स्वीकार्यता अल्लाह तआला का काम है। फ़रमाया कि "माँगना इन्सान का विशेषता है और स्वीकार्यता अल्लाह तआला का। जो नहीं समझता और नहीं मानता वह झूठा है। बच्चे की मिसाल जो मैंने वर्णन की है" जो आपने पहले वर्णन की है। "वह दुआ की फ़िलोसफ़ी ख़ूब हल करके दिखाती है। रहमानियत और रहीमियत दो नहीं हैं। अत: जो एक को छोड़ कर दूसरी को चाहता है उसे मिल नहीं सकता। रहमानियत की मांग यही है कि वह हम में रहीमियत से फ़ैज़ उठाने की शक्ति पैदा करे।'' रहमानियत अल्लाह तआला की यह है उसने तो हमें रस्ते दिखा दिए, बता दिया, चीज़ें भी दे दें और जो उसकी चीज़ें हमने मांग के लेनी हैं उसकी हिम्मत पैदा करता है। उसके लिए रहमानियत दुआ कराने और अल्लाह तआला की रहीमियत को प्राप्त करने के माध्यम पैदा करती है। फ़रमाया कि "जो ऐसा नहीं करता वो नेअमतों का इंकार करने वाला है। اِيَّاكَ نَعْبُدُ के यही अर्थ हैं कि हम तेरी इबादत करते हैं। इन ज़ाहिरी सामानों और अस्बाब की रियाइत से जो तू ने अता किए हैं।'' हम इबादत करते हैं उन ज़ाहिरी माध्यमों के द्वारा से। "देखो यह ज़बान।" ज़बान की मिसाल आप दे रहे हैं। "जो नसों और पट्ठों से बनाई गई की है।" इस की रगें हैं, नसें हैं, थूक है या पट्ठे हैं ये सब चीज़ें ज़बान का हिस्सा हैं। इसी से ज़बान बनी है। "यदि ऐसी न होती तो हम बोल नहीं सकते।" ऐसी ज़बाने ख़ुश्क हो जाती। ज़बान यदि ख़ुशक हो जाए। उस की नसें और रगें गीली न हों तो इन्सान बोल नहीं सकता। उनको हरवक़्त नमी मिल रही है तब भी इन्सान ज़बान हिला नहीं सकता। फ़रमाया कि "ऐसी ज़बान दुआ के वास्ते अता की जो दिल के ख़्यालात तक को ज़ाहिर कर सके। "फिर ख़्यालात को ज़ाहिर करने के लिए ज़बान अता की। हम इस से बोल लेते हैं। "यदि हम दुआ का काम ज़बान से कभी न लें तो यह हमारी बदनसीबी है। बहुत सी बिमारियाँ ऐसी हैं कि यदि वह ज़बान को लग जाएं तुरंत ही ज़बान अपना काम छोड़ बैठती है यहां तक कि इन्सान गूँगा हो जाता है। अत: यह कैसी रहीमियत है कि हम को ज़बान दे रखी है। "मेरा ख़्याल है शायद यहां रहमानियत का शब्द है। बहरहाल अल्लाह तआला ने ज़बान दे रखी है। यह भी इसकी रहमानियत है। और फिर इसके प्रयोग करने का तरीक़ा हमें सिखाया। इसका जो प्रयोग है और इसको हम प्रयोग करते हैं यह भी रहीमियत है।'' ऐसा ही कानों की बनावट में अंतर आ जाए तो कुछ भी सुनाई न दे। ऐसा ही क़लब का हाल है वह जो रोने और पुकारने की हालत रखी है और सोचने और ध्यान करने की शक्ति रखी हैं। यदि बीमारी आ जाए तो वे सब क़रीबन बेकार हो जाती हैं। पागलों को देखो कि उनके अंग कैसे बेकार हो जाते हैं। तो क्या यह हमको लाज़िम नहीं कि इन ख़ुदा की प्रदान की हुई नेअमतों की क़दर करें? यदि इन क़ुवा को जो अल्लाह तआला ने अपने कमाल फ़ज़ल से हमको अता की हैं बेकार छोड़ दें तो निसंदेह हम नेमत का इंकार करने वाले हैं। अत: याद रखों कि यदि अपनी कुव्वतों और शक्तियों को बेकार छोड़ कर दुआ करते हैं। तो दुआ कुछ भी फ़ायदा नहीं पहुंचा सकती क्योंकि जब हमने पहले अतीया से कुछ काम नहीं लिया तो दूसरे को कब अपने लिए मुफ़ीद और लाभदायक बना सकेंगे।"

यह उदाहरण देकर आपने स्पष्ट फ़र्मा दिया कि अल्लाह तआला की दी हुई नेअमतों की क़दर करो और उन्हें काम में लाओ जो उसका आला काम है। अल्लाह तआला से उसका सही प्रयोग माँगो और जब यह होगा तो फिर ही एक बंदा वास्तविक बंदगी का हक़ अदा कर सकता है। उसकी दी हुई नेअमतों का शुक्र अदा कर सकता है और फिर यह शुक्र इन्सान, यह जो शुक्र है फिर अल्लाह तआला के फ़ज़ल को जज़ब करता है और रहमानियत से अता की हुई चीज़ें रहीमियत से फिर हिस्सा भी लेती हैं और क़ुबूलियत-ए-दुआ के नज़्ज़ारे इन्सान देखता है।

फिर इसका और विस्तार करते हुए आपने फ़रमाया "अत: اِيَّاكَ نَعْبُدُ यह बतला रहा है कि हे समस्त संसार के पालनहार तुझ से पूर्व अतीया को भी हमने बेकार और बर्बाद नहीं किया। اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ में यह आदेश फ़रमाया है कि इन्सान ख़ुदा तआला से सच्चा मार्ग दर्शन मांगे क्योंकि यदि उस का फ़ज़ल और करम सहायक न हो तो आजिज़ इन्सान ऐसे तारीके और अंधकार में फंसा हुआ है कि वह दुआ ही नहीं कर सकता।" अल्लाह तआला का फ़ज़ल है, वही उसकी रहनुमाई करता है, वही मदद करता है अन्यथा इन्सान तो आजिज़ है, वह तो दुनिया में फंसा हुआ है। दुनिया की तारीकी में फंसा हुआ है। उसको दुआ का अवसर ही नहीं मिल सकता। "अत: जब तक इन्सान ख़ुदा के इस फ़ज़ल को जो रहमानियत के फ़ैज़ान से उसे पहुंचा है काम में ला कर दुआ न मांगे कोई नतीजा बेहतर नहीं निकाल सकता।" इन्सान को बहरहाल अल्लाह तआला से दुआ मांगनी पड़ती है इस अंधेरे से निकलने के लिए। फ़रमाया "मैंने अरसा हुआ अंग्रेज़ी क़ानून में यह देखा था कि कर्ज़ लेने के लिए पहले कुछ सामान दिखाना ज़रूरी होता है। "तक़ावी होता है एक ज़राअती क़र्ज़ा (वह सरकारी क़र्ज़ा जो किसानों को ज़मीन की दशा सुधारने

और अच्छे बैल और बीज आदि के लिए दिया जाता है) जो ज़मींदार लेते हैं। यहां भी क़र्ज़ लेते हैं जिसे mortgage इत्यादि कहते हैं तो बीच में कुछ अपनी रक़म डालनी पड़ती है या कोई ज़मानत देनी पड़ती है। सामान दिखाना ज़रूरी होता है। कुछ न कुछ काम पेश करना पड़ता है। अमली तौर पर कुछ न कुछ पेश करना पड़ता है। "इसी तरह कानून -ए-क़ुदरत की तरफ़ देखो कि जो कुछ हम को पहले मिला है इससे क्या बनाया? यदि अक़ल और होश, आँख कान रखते हुए नहीं बहके हो और नादानी और दीवानगी की तरफ़ नहीं गए तो दुआ करो और भी फ़ैज़-ए-इलाही मिलेगा।" यदि सब चीज़ें इन्सान को मिली हैं, अल्लाह तआला ने जो नेअमतें दी हैं इससे बहके नहीं हैं तो फिर दुआ करो कि अल्लाह तआला ने यह चीज़ें दी हैं तो फ़ज़्ल-ए-इलाही और बढ़ेगा'' अन्यथा महरूमी और बदक़िस्मती के लक्षण हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 128 से 131 प्रकाशन 1984 ई.)

यदि नेअमतों का सही प्रयोग नहीं है तो फिर दुआएं कोई फ़ायदा नहीं देतीं बल्कि महरूमी और बदक़िस्मती फिर इन्सान के शामिल-ए-हाल रहती है। अत: हमें इस पर बहुत ग़ौर करने की कोशिश करनी चाहिए। फिर आप फ़रमाते हैं'' क़ानून-ए-क़ुदरत में दुआओं की स्वीकार्यता की नज़ीरें मौजूद हैं और हर ज़माना में ख़ुदा तआला ज़िंदा नमूने भेजता है। इसी लिए उसने اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡھِمۡ (फ़ातिहा : 6)की दुआ फ़रमाई है। यह ख़ुदा तआला का इच्छा और क़ानून है और कोई नहीं जो इस को बदल सके। اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ की दुआ से पाया जाता है कि हमारे आमाल (कर्मों) को पूर्ण और उत्तम कर।'' हमारे आमाल (कर्मों) को पूर्ण और उत्तम कर। मुकम्मल कर। पूरा कर।'' इन शब्दों पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि बज़ाहिर तो सांकेतिक पाठ के तौर पर उससे दुआ करने का हुक्म मालूम होता है।" ज़ाहिरी तौर पर दुआ करने का हुक्म है।" सद मार्ग पर चलने की दुआ मागने का आदेश की शिक्षा है। "यह ज़रूर है। यही है इस की तरफ़ इशारा हो रहा है। "लेकिन इस के सिर पर اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ (फ़ातिहा : 5) बता रहा है कि इस से फ़ायदा उठाएं। अर्थात الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ के मनाज़िल के लिए सही अंगों से काम लेकर ख़ुदा की सहायता को माँगना चाहिए।" الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ۔ बता रहा है कि यदि को प्राप्त करना है तो फिर अल्लाह तआला ने अपने जो शरीर के अंग तुम्हें दिए हैं उनसे काम लेकर الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ पर चलने के लिए अल्लाह तआला की सहायता मांगनी पड़ेगी।'' अत: ज़ाहिरी अस्बाब की रियायत ज़रूरी है। जो इस को छोड़ता है वह नेअमतों का इंकार करने वाला है।" नेकियां करने के लिए भी अल्लाह तआला से मदद मांगनी पड़ेगी। फ़रमाया हमें "ऐसी ज़बान दुआ के लिए अता की।" अल्लाह तआला ने "जो दिल के विचारों और इरादों को ज़ाहिर कर सके।'' फिर फ़रमाया'' ऐसा ही क़लब में रोने और पुकारने की हालत रखी और सोचने और तफ़क्कुर की क़ुव्वतें डाली हैं। अत: याद रखों। यदि हम इन कुव्वतों और शक्तियों को बेकार छोड़ कर दुआ करते हैं तो यह दुआ कुछ भी मुफ़ीद और कारगर न होगी क्योंकि जब पहले अतीया से कुछ काम नहीं लिया तो दूसरे से किया लाभ उठाएँगे। इस लिए اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ से पहले اِیَّاکَ نَعۡبُدُ बता रहा है कि हमने तेरे पहले अतियों और कुव्वतों को बेकार और बर्बाद नहीं किया। याद रखों रहमानियत की विशेषता यही है कि वह रहीमियत से फ़ैज़ उठाने के योग्य बना दे। इस लिए ख़ुदा तआला ने जो اُدۡعُوۡنِیۡۤ اَسۡتَجِبۡ لَکُمۡ (मोमिन : 61) फ़रमाया यह केवल लफ़्फ़ाज़ी नहीं है बल्कि इन्सानी शरफ़ उसी का अधिकारी है। माँगना इन्सानी विशेषता है और जो स्वीकार्यता जो स्रोत अल्लाह तआला का नहीं वह ज़ालिम है।'' अर्थात जो अल्लाह तआला से मांगने की तलाश में नहीं रहता वह फिर ज़ालिम इन्सान है।'' दुआ एक आनंद प्रदान करने वाली अवस्था है कि मुझे अफ़सोस होता है कि मैं किन शब्दों में इस लज़्ज़त और आनंद को दुनिया को समझाऊँ। यह तो महसूस करने ही से पता लगेगा। मुख़्तसिर यह कि दुआ के आवश्यक वस्तुओं से प्रथम ज़रूरी यह है कि पवित्र आमाल (कर्मों)और विश्वास पैदा करें क्योंकि जो व्यक्ति अपनी आस्था को दरुस्त नहीं करता और पवित्र आमाल (कर्मों) से काम नहीं लेता और दुआ करता है वे जैसे ख़ुदा तआला की परीक्षा लेता है। तो बात यह है कि اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ(फ़ातिहा : 6) की दुआ में यह उद्देश्य है कि हमारे आमाल (कर्मों) को पूर्ण और उत्तम कर और फिर यह कह कर कि صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡھِمۡ (फ़ातिहा : 6) और भी व्याख्या कर दी कि हम इस साद मार्ग का मार्गदर्शन चाहते हैं जो ईनाम पाने वाले लोग है और मग़ज़ूब गिरोह की राह से बचा जिन पर बदआमाल (कर्मों) की वजह से अज़ाब -ए-इलाही आगया और الضَّآلِّیۡنَ कह कर यह दुआ की शिक्षा दी कि इस से भी सुरक्षित रख कि तेरी हिमायत के बिना भटकते फिरें।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 199-200 प्रकाशन 1984 ई.)

बग़ैर तेरी हिमायत के हम भटकते फिरें। हमें भटकने से भी बच्चा। अत: इस लिहाज़ से ग़ौर करकेसूरत फ़ातिहा भी जब पढ़ें तो इस तरह दुआ करनी चाहिए।

फिर आप दुआ में अस्बाब की रियाइत के ज़रूरी होने का वर्णन करते हुए मज़ीद फ़रमाते हैं कि "सुनो! वह दुआ जिसके लिए اُدۡعُوۡنِیۡۤ اَسۡتَجِبۡ لَکُمۡ(मोमिन : 61) फ़रमाया है इसके लिए यही सच्ची रूह मतलूब है। यदि इस रोने और गिडगिडाने में हक़ीक़त की रूह नहीं तो वह टें टें से कम नहीं है। फिर कोई कह सकता है कि अस्बाब की रियाइत ज़रूरी नहीं है। यह एक ग़लतफ़हमी है। शरीयत ने अस्बाब को मना नहीं किया है और सच्च पूछो तो क्या दुआ अस्बाब नहीं? या अस्बाब दुआ नहीं ? तलाश-ए-अस्बाब बजाए ख़ुद एक दुआ है और दुआ स्वयं महान अस्बाब का स्रोत है। इन्सान की ज़ाहिरी बनावट उसके दो हाथ दो पांव की बनावट एक दूसरे की सहायता का एक क़ुदरती उदाहरण है। जब यह दृश्य ख़ुद इन्सान में मौजूद है फिर किस क़दर हैरत और ताज्जुब की बात है कि वह تَعَاوَنُوۡا عَلَی الۡبِرِّ وَالتَّقۡوٰی (अलमायदा : 3) के अर्थ समझने में मुश्किलात को देखे।

हाँ! मैं कहता हूँ कि तलाश-ए-अस्बाब भी दुआ के माध्यम से करो। इमदाद-ए-बाहमी। मैं नहीं समझता कि जब मैं तुम्हें तुम्हारे जिस्म के अंदर अल्लाह तआला का एक क़ायम करदा सिलसिला और कामिल रहनुमा सिलसिला दिखाता हूँ तुम इस से इंकार करो। अल्लाह तआला ने अस्बाब को और भी साफ़ करने और वज़ाहत से दुनिया पर खोल देने के लिए नबियों अलैहिस्सलाम का एक सिलसिला दुनिया में क़ायम किया। अल्लाह तआला इस बात पर क़ादिर था और कादिर है कि यदि वह चाहे तो किसी किस्म की इमदाद की ज़रूरत उन रसूलों को बाक़ी न रहने दे परन्तु फिर भी एक वक़्त उन पर आता है कि वो مَنۡ اَنۡصَارِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ (अल् सफ़ : 15) कहने पर मजबूर होते हैं। क्या वे एक टिकटर डंडा पकड़ कर आवाज़ देने वाले फ़क़ीर की तरह सदा देते हैं? नहीं। مَنۡ اَنۡصَارِیۡۤ اِلَی اللّٰہِ कहने की भी एक शान होती है। वे दुनिया को रिआयत-ए-अस्बाब सिखाना चाहते हैं। "जो सामान दुनियावी हैं यह मुहय्या करने भी ज़रूरी हैं "जो दुआ का एक विभाग है अन्यथा अल्लाह तआला पर उनको कामिल ईमान और उसके वादों पर पूरा यक़ीन होता है। वे जानते हैं कि अल्लाह तआला का वादा कि اِنَّا لَنَنۡصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا فِی الۡحَیٰوۃِ الدُّنۡیَا (उल-मोमिन52)''कि हम अपने रसूलों की और उन पर ईमान लाने वालों की इस दुनिया में ज़रूर मदद करेंगे। फ़रमाया कि "एक यक़ीनी और पक्का वादा है। मैं कहता हूँ कि भला यदि ख़ुदा किसी के दिल में मदद का ख़्याल न डाले तो कोई क्योंकर मदद कर सकता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 168-169 प्रकाशन 1984 ई.)

अत: नबियों को भी अस्बाब की ज़रूरत होती है लेकिन अल्लाह तआला के आगे झुकते हैं और फिर अल्लाह तआला ही उन के लिए अस्बाब मुहय्या कर देता है। लोगों के दिलों में डालता है और सुलतान -ए-नसीर मुहय्या फ़र्मा देता है जो उनके काम को आगे बढ़ाने वाले होते हैं।

दुआ के हवाले से नमाज़ के उद्देश्य और महत्ता को वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं कि "नमाज़ का असली उद्देश्य और मग़ज़ दुआ ही है और दुआ माँगना अल्लाह तआला के क़ानून-ए-क़ुदरत के ठीक अनुसार है। उदाहरणता हम आम तौर पर देखते हैं कि जब बच्चा रोता धोता है और बेचेनी ज़ाहिर करता है तो माँ किस क़दर बेक़रार हो कर उस को दूध देती है। उलूहियत और उबूदीयत में इसी किस्म का एक सम्बन्ध है जिस को हर व्यक्ति समझ नहीं सकता। जब इन्सान अल्लाह तआला के दरवाज़ा पर गिर पड़ता है और निहायत आजिज़ी और रो रो कर और गिडगिडा के उस के हुज़ूर अपने हालात को पेश करता है और उससे अपनी ज़रूरतों को मांगता है तो उलूहियत का करम जोश में आता है और ऐसे व्यक्ति पर रहम किया जाता है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल और करम का दूध भी एक रो रोक करे पुकारने को चाहता है इस लिए उसके हुज़ूर रोने वाली आँख पेश करनी चाहिए।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 352 प्रकाशन 1984 ई.)

फिर आप फ़रमाते हैं "कुछ लोगों का यह ख़्याल कि अल्लाह तआला के हुज़ूर रोने धोने से कुछ नहीं मिलता। बिल्कुल ग़लत और व्यर्थ है'' यह चीज़। "ऐसे लोग अल्लाह तआला की हस्ती और उसकी विशेषताओं और कर्मों पर ईमान नहीं रखते। यदि उनमें वास्तविक ईमान होता तो वह ऐसा कहने का साहस न करते। जब कभी कोई व्यक्ति अल्लाह तआला के हुज़ूर आया है और उसने सच्ची तौबा के साथ रुजू किया है अल्लाह तआला ने हमेशा उस पर अपना फ़ज़्ल किया है। यह किसी ने

बिल्कुल सच्च कहा है

عاشق کہ شد کہ یار بحالش نظر نہ کرد
اے خواجہ! درد نیست وگرنہ طبیب ہست

''कौन है जो आशिक़ हुआ हो और यार ने उसके हाल पर नज़र न की हो। हे साहिब दर्द ही नहीं अन्यथा तबीब तो मौजूद है।

"ख़ुदा तआला तो चाहता है कि तुम उस के हुज़ूर पवित्र दिल लेकर आ जाओ केवल् शर्त इतनी है कि उसके मुनासिब-ए-हाल अपने आपको बनाओ और वह सच्ची तबदीली जो ख़ुदा तआला के हुज़ूर जाने के काबिल बना देती है अपने अंदर करके दिखाओ। मैं तुम्हें सच्च सच्च कहता हूँ कि ख़ुदा तआला में अजीब दर अजीब क़ुदरतें हैं और उस में असीमित फ़ज़ल-ओ-बरकात हैं परन्तु उनके देखने और पाने के लिए मुहब्बत की आँख पैदा करो। यदि सच्ची मुहब्बत हो तो ख़ुदा तआला बहुत दुआएं सुनता है और ताईदें करता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 352-353 प्रकाशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम मौमिनों की प्रशंसा करते हुए ख़ुदा तआला फ़रमाता है-

يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّ قُعُوْدًا وَّ عَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَ يَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا (आले इमरान:192)

अर्थात् मौमिन वे लोग हैं जो ख़ुदा को खड़े और बैठे तथा अपने बिस्तरों पर लेटे हुए स्मरण करते हैं तथा धरती और आकाश में जो कुछ अद्भुत कारीगरी और कलाएँ विद्यमान हैं उन के संबंध में चिन्तन और विचार करते रहते हैं। जब ख़ुदा की कारीगरी के रहस्य उन पर प्रकट होते हैं तो कहते हैं कि हे ख़ुदा तू ने इस कारीगरी और कलाओं को व्यर्थ में उत्पन्न नहीं किया अर्थात् वे लोग जो मौमिन विशेष हैं वे कला के पारखी तथा खगोलीय ज्ञान द्वारा संसार के पुजारियों की भांति केवल इतना ही उद्देश्य नहीं रखते कि उदाहरणतया इसी पर संतुष्ट हो जाएं कि पृथ्वी की आकृति यह है तथा उनका व्यास इतना है उसके गुरुत्वाकर्षण का विवरण यह है और सूर्य और चन्द्रमा और नक्षत्रों से उसका सम्बन्ध इस प्रकार का है अपितु वह उस कारीगरी और कला की पूर्णता का ज्ञान प्राप्त करने के पश्चात तथा उसके रहस्य प्रकट होने के बाद निर्माणकर्ता की ओर लौट जाते हैं तथा अपने ईमान को दुदृढ़ करते हैं।

(सुरमा चश्म आर्य रूहानी ख़ज़ायन भाग 2 पृष्ठ 191-192)

अर्थात ज्ञान प्राप्त करके ख़ुदा तआला की तरफ़ झुकते हैं। जैसा कि मैंने पहले भी कहा और अपने ईमान को मज़बूत करते हैं। और यही एक मोमिन की विशेष निशानी और इमतियाज़ है।

यह कुछ बातें मैंने इस अज़ीम खज़ाने में से पेश की हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें अता फ़रमाया जिससे दुआ की महत्ता, हिक्मत, दुआएं मांगने का तरीक़, उसकी फ़िलोसफ़ी सब पर कुछ न कुछ रोशनी पड़ती है। यदि हम इस को समझने वाले हों तो हम अपनी ज़िंदगीयों में एक इन्क़िलाब पैदा कर सकते हैं। ख़ुदा तआला से सम्बन्ध में एक विशेष कैफ़ीयत पैदा कर सकते हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल को जज़ब करने वाले बन सकते हैं। अत: हमें इस रमज़ान में कोशिश करनी चाहिए कि हम अल्लाह तआला के प्रेम को पाने के लिए उस के हुक्मों पर चलने वाले हों। अपने ईमानों को मज़बूत करते चले जाने वाले हों। दुआ की हिक्मत और फ़िलोसफ़ी को समझने वाले हों। अपने आमाल (कर्मों) की इस्लाह करने वाले बनें और उन लोगों में शामिल हों जिनकी दुआएं अल्लाह तआला के हुज़ूर स्वीकार होती हैं। यह रमज़ान हमारे अल्लाह तआला से सम्बन्ध और रुहानी सम्बन्ध में, रुहानी हालत में एक इन्क़िलाब पैदा करने वाला हो।

अपने भाईयों के लिए भी दुआएं करें। पहले भी मैं दुआओं के लिए तहरीक करता रहता हूँ। जो पाकिस्तान में हैं या अल-जज़ायर में हैं या किसी भी जगह में हैं और किसी भी तरह खासतौर पर जमाती मुश्किलात में गिरफ़्तार हैं। पाकिस्तान में तो रोज़ाना कोई न कोई वाक़िया हो जाता है जहां अहमदियों को किसी न किसी रंग में तकलीफ़ें दी जाती हैं। इसलिए खासतौर पर उनके लिए दुआएं करनी चाहिऐं। इसी तरह अल-जज़ायर में भी शायद दुबारा उनके केस खोलने के इरादे हैं। अल्लाह तआला उनको भी सुरक्षित रखे।

दूसरों के लिए दुआएं करने से भी अपनी दुआएं स्वीकार होती हैं। ये नुस्ख़ा हमेशा याद रखना चाहिए बल्कि दूसरों के लिए दुआएं करने वाले के लिए फ़रिश्ते दुआएं करते हैं और फ़रिश्तों की दुआएं जब हो रही हूँ तो यह किस क़दर लाभदायक सौदा है। अत: हमें खासतौर पर केवल अपने लिए नहीं दूसरों के लिए भी बहुत ज़्यादा दुआएं करनी चाहिऐं। अल्लाह तआला हमें इसकी भी इस रमज़ान में खासतौर पर तौफ़ीक़ अता फ़रमाए ☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

है यदि अपने माँ बाप से सम्पर्क के लिए प्रयोग करते हो तो कोई हर्ज नहीं है अपने दोस्तों अपनी study की बात पूछने के लिए text करते हो या सम्पर्क रखते हो तो कोई हर्ज नहीं, परन्तु यदि तुम बजाय नेक काम करने, ग़लत applications और सारा दिन उसकी किसी game के पीछे लगे रहो और नमाज़ें भी छोड़ दें और सारा दिन ऐसी ग़लत फिल्में देखने लग गए जिससे तुम्हारे अख़लाक़ ख़राब होने लगें, तो फिर हर्ज है, इस लिए यह न चौदह पंद्रह वर्ष की आयु का प्रश्न है न अठारह बीस वर्ष की आयु का प्रश्न है, यदि उस का ग़लत प्रयोग है तो वह बड़े के लिए भी ग़लत है और छोटे के लिए भी ग़लत है, परन्तु, क्योंकि छोटे को अक़्ल नहीं होती, इस लिए वह जल्दी लोगों की बातों में आ कर ग़लत काम करने लग जाते हैं। यदि तुम्हारे में अक़्ल है तो बेशक करो। यह तुम्हारे अम्मां अब्बा तुम्हें ले के देंगे परन्तु महंगा भी आता है। कितने का आ जाता है iphone (वक़्फ़ नौ विद्यार्थी ने अर्ज़ किया दो सौ यूरो का।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अब अम्मां अब्बा तुम्हारे पर दो सौ यूरो ख़र्च करेंगे तो तभी ही मिलेगा।

एक वक्फे नौ विद्यार्थी ने अर्ज़ किया कि एक दुआ की दरख़ास्त है कि मेरे मामूं malaysia में रहते हैं कि उनका केस जल्दी से पास हो जाए।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : बाक़ी सब का भी हो जाए, केवल तुम्हारे मामूं का क्यों हो।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि जब आप हुज़ूर बने थे आप को कैसा feel हुआ?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : बस ऐसा feel हुआ जैसे मुझ पर किसी ने पहाड़ लाद दिया हो।

एक बच्चे ने प्रश्न किया कि जो शहीद होते हैं उनको उन्ही कपड़ों में क्यों दफ़ना दिया जाता है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : किस ने कहा है? कई दफ़ा ऐसा अवसर होता है कि जंगों में जो शहीद होते थे, उस समय उनके कफ़न दफ़न के लिए कोई चीज़ नहीं होती और नाशों के ख़राब होने का ख़तरा होता था। इस लिए उनको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस समय जिस कपड़े में वह होते थे दफ़ना देते थे, बल्कि उनकी तो ऐसी हालत होती थी कि कपड़े भी उनके पास पूरे नहीं होते थे, यदि सिर को ढाँकते थे तो पांव नंगे हो जाते थे पांव को ढाँकते थे तो सिर नंगा हो जाता था। अत: जब इस तरह हालत हो कि नाश ख़राब होने का ख़तरा हो तो नहलाए बिना उसे दफ़न किया जा सकता है। परन्तु यदि किसी शहीद की ऐसी हालत नहीं है और उसको नहलाया जा सकता है तो फिर उसको नहलाया भी जाता है और कफ़नाया भी है।

एक वक्फे नौ ने प्रश्न किया कि अहमदी बच्चों को smartphone लेने की आज्ञा है?

तो इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अहमदी बच्चों को smartphone लेने की आज्ञा इस शर्त पर है यदि उनका ग़लत प्रयोग नहीं करते और तुम्हारे अम्मां अब्बा भी इस बात पर राज़ी हो जाते हैं। परन्तु यदि तुम सारा दिन chat करते रहो और देखते रहो और ग़लत किस्म की applications उस के अंदर डाल लो और फिर बजाय नेक आदमी बनने के व्यर्थ किस्म की बातें सीखते रहो। तो मेरे विचार में ऐसा नहीं होना चाहिए। परन्तु तुम्हारी यह हालत देख के ही तुम्हारे अम्मां अब्बा फ़ैसला करेंगे कि तुम्हें देना चाहिए कि नहीं। तुम मेरे से उसूली आज्ञा लेकर अपने अम्मां अब्बा को ना कह देना जाके कि आज्ञा मिल गई।

एक वक्फे नौ तिफ़्ल ने प्रश्न किया कि facebook प्रयोग करना मना क्यों है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिलने फ़रमाया : यह कोई शरई हुक्म नहीं है। शरीयत में तो मना नहीं। मैंने इस लिए मना किया था कि आजकल के facebook में लोग बुराईयों में ज़्यादा पड़ जाते हैं और अच्छाईयां कम हैं। परन्तु जमाअत अहमदिया ने facebook बनाई हुई है। जमाअत अहमदिया का alislam के ऊपर facebook भी है। जमाअत अहमदिया की दूसरी ज़ेली तंज़ीमें हैं उन्होंने facebook बनाई हुई हैं। कुछ इन्फ़िरादी लोगों ने, दो-चार ने इकट्ठे हो कर अपनी facebook बनाई हुई है, जिससे वह तब्लीग़ करते हैं। तो यह हराम नहीं है, परन्तु होशोहवास से इस का प्रयोग करने के लिए,

ज़रूरी है कि एक हद तक एहतियात की जाए। जब तुम्हें अक़्ल आ जाए तो तब इस में क्योंकि facebook के माध्यम से बहुत सारी बुराईयां फैल रही हैं। facebook के माध्यम से कुछ लड़कों को कुछ लोगों ने ग़लत कामों में डाल दिया। कुछ लड़कीयों से ग़लत काम करवा लिए। फिर उनको blackmail करते हैं, फिर उनको ग़लत रस्तों पर चलाते हैं, जमाअत से उनको दूर हटाते हैं। अभी तुम्हारा ज्ञान जमाअत का इतना नहीं है। पहले जमाअत के बारे में पूरा ज्ञान प्राप्त करो। फिर किसी मज़हबी facebook पर जाओ। फिर दुनिया-दारी का मुअल्लिम जो है इस में भी तुम्हारी इतनी अक़्ल हो कि facebook पर जो कुछ प्रश्न उठते हैं। इन का उत्तर दे सको। अभी तुम प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते और तुम्हारे अम्मां अब्बा भी यदि तुम्हें उस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकेंगे तो तुम समझोगे facebook वाला जो तुम्हें approach कर रहा है वह सही है, हालाँकि तुम्हें चाहिए था कि उसकी जाँच पड़ताल करो, जमाअत के किसी पढ़े लिखे आदमी से किसी आलिम से पूछो, मुरब्बी साहिब से रुजू करो, अपने incharge से पूछो। तो facebook में बहुत सारी ऐसी बातें आ जाती हैं जिनसे बुराईयां फैलने का विचार है और बुराईयां फैलती हैं। यूरोप में बहुत सारे लोग ऐसे भी हैं और अमरीका में भी हैं जिन्हों ने कहा है कि हमें facebook ने ग़लत कामों में डाल दिया। इस लिए मैंने कहा था इस से बचने का प्रयास करना चाहिए। तुम्हारी आयु अभी नहीं है। हाँ यदि facebook में जाना है तो जो जमाअती facebook हैं उन पर जाओ।

एक बच्चे ने कहा कि मैंने पूछना है कि यदि कोई जर्मन या कोई दूसरा हम से पूछे कि आपको कैसे पता है कि इस्लाम सच्चा धर्म है तो हम उनको कैसे बताएँगे?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : देखो पहली बात तो यह है कि सबसे बड़ा ज़िंदा सबूत हमारे पास यह है कि क़ुरआन-ए-करीम ने यह दावा किया कि यह क़ुरआन-ए-करीम original शक्ल में महफ़ूज़ रहेगा। चौदह सौ, पंद्रह सौ वर्ष हो गए और यह महफ़ूज़ रहा। तौरात और दूसरी कुतुब, इंजील और बाईबल और दूसरी पुस्तकें जो विभिन्न अनबया पर उतरीं वह एक हद तक, जब तक उनकी शिक्षा की आवश्यकता थी, महफ़ूज़ रहे। उसके बाद बिगड़ गए। बाईबिल भी बिगड़ गई थी, तौरात भी बिगड़ गई थी, तभी तो यहूदी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में भी अनुकरण नहीं करते थे। परन्तु क़ुरआन-ए-करीम का यह दावा कि यह हमेशा महफ़ूज़ रहेगा तो यह आज तक महफ़ूज़ है। तुम्हारे पास print की सूरत में, किताब की सूरत में महफ़ूज़ है। बहुत सारे हाफ़िज़-ए-क़ुरआन हैं, क़ुरआन-ए-करीम हिफ़्ज़ कर लेते हैं, हज़ारों लाखों हाफ़िज़-ए-क़ुरआन इस्लाम में हैं जिन्होंने हिफ़्ज़ किया हुआ है, उनके सीनों में महफ़ूज़ है। फिर हम पाँच नमाज़ों में इस की आयतें पढ़ते हैं, क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करते हैं तो एक बहुत बड़ा सबूत यह है कि क़ुरआन-ए-करीम के माध्यम जो शरीयत उत्तरी वह सच्ची शरीयत है और दावा है कि हमेशा महफ़ूज़ रहेगी तो महफ़ूज़ रही। तो एक बहुत बड़ी दलील यही है। फिर यह कि revival के लिए उसके नए सिरे से इस को जारी रखने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई, उसके अनुसार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आ गए। उन्होंने दावा किया और जमाअत अहमदिया क़ायम हुई और हम अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत के काम, इस्लाम की तरक़्क़ी के काम को आगे बढ़ा रहे हैं और जो दूसरे लोग हैं वह इस्लाम की शिक्षा पर अनुकरण करते हुए अपने मिशन को आगे नहीं फैला रहे, मसला ईसाईत थी, एक ज़माना में यदि फैली भी तो वह केवल लोगों के स्वभाव के अनुसार अपनी शिक्षा को ढालती रही, अफ़्रीक़ा में और माध्यम से शिक्षा दी जा रही है, यूरोप में और रूप से दी जाती है और फिर आहिस्ता-आहिस्ता इस धर्म को लोग छोड़ भी रहे हैं और इस्लाम स्वीकार करने की ओर आ रहे हैं और अल्लाह के फ़ज़ल से हज़ारों लाखों लोग प्रत्येक वर्ष अहमदी मुस्लमान भी बनते हैं। तो यह मोटी-मोटी बातें बतादें, यह सच्चाई की दलील हैं। फिर दुआएं स्वीकार होती हैं, ख़ुदा तआला अहमदियों की दुआएं स्वीकार करता है। तुम्हारी दुआ स्वीकार हुई कभी? इस पर बच्चे ने सिर हिलाया। इस पर हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया बस यह भी फिर सच्चाई है। बहुत सारी दलीलें दिया करो और अपनी स्वीकृत दुआ की दलील दो।

एक बच्चे ने प्रश्न किया कि हुज़ूर ने एक ख़ुतबा में इतफ़ालुल अहमदिया को mobile रखने से मना किया कि यह हमारे लिए इस लिए मना है क्योंकि हम कोई bussiness नहीं करते न कोई काम करते हैं जिस के लिए हमें फ़ोन की आवश्यकता पड़े। मैंने यह भी सुना है कि जब कोई ख़ादिम बन जाता है। पंद्रह वर्ष का होता है तो वह ले सकता है। तो मेरा प्रश्न है कि जब कोई तिफ़्ल पंद्रह वर्ष का हो जाए तो उसको mobile लेने की आज्ञा है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया प्रश्न यह है कि mobile कोई गुनाह तो नहीं है, यदि आवश्यकता है, कुछ माँ बाप बड़े वहमी होते हैं वह समझते हैं हमारे बच्चों से हमारा सम्पर्क रहे, वह चौदह पंद्रह वर्ष की आयु में ले देते हैं, यदि तो तुम इसका ग़लत प्रयोग नहीं कर रहे और आजकल के जो mobile आए हुए हैं cellphone आए हुए हैं iphone है या वे जो उसने नाम लिया था स्मार्टफोन और जो दूसरे, samsung इत्यादि के जितने फ़ोन हैं android इत्यादि, उन पर दूसरी applicationsभी आती जाती हैं, ग़लत बातें भी आ जाती हैं, यदि तो तुम उनको नेक कामों के लिए प्रयोग करते होतो मैंने जैसे पहले भी बताया, तो कोई हर्ज नहीं है यदि अपने माँ बाप से सम्पर्क के लिए प्रयोग करते हो तो कोई हर्ज नहीं है अपने दोस्तों अपनी study की बात पूछने के लिए text करते हो या सम्पर्क रखते हो तो कोई हर्ज नहीं, परन्तु यदि तुम बजाय नेक काम करने, ग़लत applications और सारा दिन उसकी किसी game के पीछे लगे रहो और नमाज़ें भी छोड़ दें और सारा दिन ऐसी ग़लत फिल्में देखने लग गए जिससे तुम्हारे अख़लाक़ ख़राब होने लगें, तो फिर हर्ज है, इस लिए यह न चौदह पंद्रह वर्ष कीआयु का प्रश्न है न अठारह बीस वर्ष की आयु का प्रश्न है, यदि उस का ग़लत प्रयोग है तो वह बड़े के लिए भी ग़लत है और छोटे के लिए भी ग़लत है, परन्तु, क्योंकि छोटे को अक़्ल नहीं होती, इस लिए वह जल्दी लोगों की बातों में आ कर ग़लत काम करने लग जाते हैं। यदि तुम्हारे में अक़्ल है तो बेशक करो। यह तुम्हारे अम्मां अब्बा तुम्हें ले के देंगे परन्तु महंगा भी आता है। कितने का आजाता है iphone (वक़्फ़ नौ विद्यार्थी ने अर्ज़ किया दो सौ यूरो का।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अब अम्मां अब्बा तुम्हारे पर दो सौ यूरो ख़र्च करेंगे तो तभी ही मिलेगा।

एक वक़्फे नौ विद्यार्थी ने अर्ज़ किया कि एक दुआ की दरख़ास्त है कि मेरे मामूं malaysia में रहते हैं कि उनका केस जल्दी से पास हो जाए।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : बाक़ी सब का भी हो जाए, केवल तुम्हारे मामूं का क्यों हो।

एक वक़्फे नौ ने प्रश्न किया कि जब आप हुज़ूर बने थे आप को कैसा feel हुआ?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : बस ऐसा feel हुआ जैसे मुझ पर किसी ने पहाड़ लाद दिया हो।

एक बच्चे ने प्रश्न किया कि जो शहीद होते हैं उनको उन्ही कपड़ों में क्यों दफ़ना दिया जाता है?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : किस ने कहा है? कई दफ़ा ऐसा अवसर होता है कि जंगों में जो शहीद होते थे, उस समय उनके कफ़न दफ़न के लिए कोई चीज़ नहीं होती और नाशों के ख़राब होने

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

का ख़तरा होता था। इस लिए उनको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस समय जिस कपड़े में वह होते थे दफ़ना देते थे, बल्कि उनकी तो ऐसी हालत होती थी कि कपड़े भी उनके पास पूरे नहीं होते थे, यदि सिर को ढाँकते थे तो पांव नंगे हो जाते थे पांव को ढाँकते थे तो सिर नंगा हो जाता था। अत: जब इस तरह हालत हो कि नाश ख़राब होने का ख़तरा हो तो नहलाए बिना उसे दफ़न किया जा सकता है। परन्तु यदि किसी शहीद की ऐसी हालत नहीं है और उसको नहलाया जा सकता है तो फिर उसको नहलाया भी जाता है और कफ़नाया भी है।

एक बच्चे ने प्रश्न किया कि जब हम ट्रेन में यात्रा करते हैं तो और भी लोग होते हैं जिनके पास pets होते हैं तो यदि उनका pet हमारे कपड़ों से लगके गुज़रे तो उन कपड़ों में नमाज़ पढ़ी जा सकती है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : आजकल तो वह अपने pet को shampoo करा करा के इतना साफ़ कर देते हैं कि तुम्हारे कपड़ों से ज़्यादा साफ़ वे pet होते हैं। बात यह है कि नमाज़ पढ़ी जा सकती है यदि कपड़े बदलने का अवसर हो तो बदल लें परन्तु इस बहाने से नमाज़ छोड़ी नहीं जा सकती। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माना में लोगों के पास बड़ी बड़ी बकरीयों के रेवड़ होते थे और उनकी निगरानी के लिए उन्होंने shepard जो कुत्ते होते हैं रखे होते थे, इस ज़माना में भी कुत्ते होते थे और कुत्तों को रखा होता था ताकि बकरीयों के रेवड़ को एक जगह contain करके रखें। तो वह जो रेवड़ की रखवाली करने वाले सहाबा थे वह सारा दिन फिरते थे कुत्ते भी उनके साथ रहते थे, उनके कपड़ों से touch भी करते होंगे, वह सहाबा आते थे और फिर मस्जिद नब्वी में नमाज़ पढ़के भी चले जाते थे। वह कपड़े बदल के और नहा धो कर तो नहीं न आया करते थे। यह तो नमाज़ न पढ़ने के बहाने हैं। यदि लग जाए तो कोई ऐसी बात नहीं है। एक कुत्ते के ऊपर ही मुस्लमानों को ज़्यादा तकलीफ़ होती है परन्तु यह बिल्ली को सारा दिन चूमते रहते हैं। ये बिल्लियां भी तो होती हैं। परिंदे भी हो सकते हैं। कुत्तों की बात कर रहे हो तो यदि साथ लग गया है तो कोई हर्ज नहीं है, तुम आराम से नमाज़ पढ़ सकते हो और फिर बाद में यदि तुम्हें ज़्यादा कराहत आती है तो जा के किसी समय कपड़े बदल लो,परन्तु नमाज़ का समय ज़ाए नहीं करना चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : कुछ हमारे हाँ पाकिस्तान में रिवाज है कि कुत्ते को हाथ लग गया तो जब तक सात दफ़ा हाथ न धो ले तो उस समय तक तुम्हारे हाथ पाक नहीं होते, एक औरत रब्वाह में आई, ग़ैर अहमदी दूध देने वाली औरतें और पुरुष पास के गांव से आया करते हैं। किसी के घर में कुत्ता रखा हुआ था। इसको हाथ लग गया या कुत्ते ने उस का हाथ चाट लिया तो उसने एक दफ़ा साबुन से हाथ धोया। और ख़त्म हो गया। तो वह कहने लगी। है है तुम तो काफ़िर हो गए, हाथ को सात दफ़ा धोना चाहिए था तुम्हें कुत्ते की जीभ लग गई है। और नापाक हो गए तुम, पलीद हो गए हो जाओ, मैं तुम्हें आइन्दा से दूध भी नहीं दूंगी, तो यह हालत हो जाती है और ऐसे लोग भी होते हैं तो किसी काम के लिए इतनी ज़्यादा अतिशयोक्ति भी नहीं चाहिए।

एक वक्फ़े नौ बच्चे ने प्रश्न किया कि अल्लाह तआला ने कब मुस्लमानों पर एक दिन में पाँच नमाज़ें अनिवार्य कीं हैं?

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यह हुक्म अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर नाज़िल फ़रमाया बल्कि क़ुरआन-ए-मजीद में बहुत सी जगहों पर पाँच नमाज़ों का हुक्म है बल्कि उनके समय भी बताए गए हैं। इसी प्रकार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी सुन्नत से हमें बताया कि ये पाँच नमाज़ें कैसे और किस समय अदा की जाएं। एक हदीस भी है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक दफ़ा मगरिब प्रथम समय में अदा फ़रमाई और दूसरे समय में आख़िरी समय में अदा फ़रमाई, इसी तरह इशा, फ़ज्र, ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें भी अव्वल और आख़िर औक़ात में अदा फ़रमाई। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आपने दो विभिन्न औक़ात में नमाज़ें क्यों अदा की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का फ़रिश्ता मेरे पास आया था और उसने मुझे ये दो समय नमाज़ों के बताए थे एक अव्वल समय और एक अंतिम समय बताया है कि इनके मध्य नमाज़ अदा की जा सकती है। अत: ये विभिन्न समय आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें बताए हैं।

एक बच्चे ने प्रश्न किया कि हुज़ूर जब free time में आप खाना खाते हुए या सोते हुए जो भी करते हैं उस समय भी आपके पास security होती है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मेरा तो इस ओर ध्यान नहीं रहता, ऑफ़िस में मेरे क़रीब कोई नहीं होता मैं घर में बिल्कुल free होता हूँ और दफ़्तर में भी free होता हूँ बल्कि रात को में अपने दफ़्तर में काम कर रहा होता हूँ और दफ़्तर का कोई कार्यकर्ता भी मेरे पास नहीं होता।

निसाब वक़्फ़ नौ में नुमायां पोज़ीशन्ज़ प्राप्त करने वाले वाक़फ़ीन में तक़सीम इनामात

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इन वाक़फ़ीन नौ को अपने मुबारक हस्ताक्षर से इनामात प्रदान फ़रमाए, जिन्होंने पिछले वर्ष 2014 के सालाना जायज़ा निसाब वक़्फ़ नौ में अपनी आयु के हिसाब से जर्मनी भर में पहली तीन पोज़ीशन्ज़ प्राप्त की थीं। 12 वर्ष के ग्रुप में अव्वल प्रिय सदीद हमीद, दोम प्रिय मुहम्मद फ़रहान शेख़ और सोम प्रिय फ़रासत हस्बान अली थे। तेराह वर्ष के ग्रुप में अव्वल प्रिय उसमान अहमद आमिर, दोम प्रिय फ़ारान राशिद और सोम प्रिय मिसबाहुल हक़ शमस रहे। चौदह वर्ष के ग्रुप में अव्वल प्रिय जाज़िब आसिफ़, दोम हसन अहमद सलाम संधू और सोम अर्सलान अहमद ढिल्लों रहे। अल्लाह तआला इन सबके लिए यह सम्मान मुबारक करे आमीन।

वाक़फ़ीन नौ की क्लास सात बज कर दस मिनट पर ख़त्म हुई

3 जून 2015 बुधवार के दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पत्र , रिपोर्टस और दफ़्तरी डाक मुलाहिज़ा फ़रमाई और हिदायात से नवाज़ा। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की विभिन्न दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही

फ़ैमिली और अकेले में मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार सवा 12 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज सुबह के इस सैशन में 41 फ़ैमिलीज़ के 162 लोग ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। प्रत्येक ने मुलाक़ात के समय अपने आक़ा के साथ तसावीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

मुलाक़ात का सौभाग्य पाने वालों में फ़्रैंकफ़र्ट की जमाअतों से आने वाली फ़ैमिलीज़ और लोगों के दूसरी विभिन्न 27 जमाअतों और शहरों से आने वाली फ़ैमिलीज़ भी शामिल थीं। उनमें कासल से आने फ़ैमिलीज़ 200 किलोमीटर और आकिन से आने फ़ैमिलीज़ 267 किलोमीटर की यात्रा करके पहुंची थीं। इन सभी ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया और प्रत्येक उनमें से बरकतें समेटते हुए बाहर आया। बीमारों ने अपनी शिफ़ायाबी के लिए दुआएं प्राप्त कीं। परेशानियों और समस्याओं में घिरे हुए लोगों ने अपनी तकालीफ़ दूर होने के लिए दुआ की दरख़ास्तें कीं और दिल की संतुष्टि पा कर मुस्कुराते हुए चेहरों के साथ बाहर निकले। कुछ ने अपने विभिन्न मुआमलात और कारोबार के लिए रहनुमाई प्राप्त की। विद्यार्थीयों ने अपने परीक्षा में सफ़लता के लिए अपने प्यारे आका से

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 27 May 2021 Issue No.21

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

दुआएं प्राप्त कीं । उद्देश्य प्रत्येक ने अपने महबूब आक़ा की दुआओं से हिस्सा पाया। दुआओं के खज़ाने लूटे और उनकी परेशानियाँ और तकालीफ़ राहत और सकून और इतमीनान क़लब में बदल गईं और ये मुबारक क्षण उन्हें हमेशा के लिए सेराब कर गए। मुलाक़ातों का ये प्रोग्राम अढ़ाई बजे तक रहा।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नमाज़ ज़ुहर और अस्र की अदायगी के लिए पधारे।

नमाज़ जनाज़ा हाज़िर और ग़ायब

नमाज़ों की अदायगी से पूर्व हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निमंलिखित तीन हाज़िर जनाज़े और चार जनाज़ा ग़ायब पढ़ाए

जनाज़ा हाज़िर

1 आदरणीय मुहम्मद यूसुफ़ बिक्र साहिब (जमाअत मन हाइम,जर्मनी) मरहूम ने एक जून 2015 को 70 वर्ष की आयु में वफ़ात पाई इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। आप रिश्ते में आदरणीय सय्यद कमाल यूसुफ़ साहिब भूत पूर्व मुबल्लिग़ सकीनडे नियुया के चचा थे।

2 आदरणीय लतीफ़ अहमद साहिब (मन हाइम, जर्मनी) मरहूम ने एक जून 2015 को 75 वर्ष की आयु में वफ़ात पाई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। एक लंबा अरसा वापडा में नौकरी के सिलसिला में सूबा सरहद में निर्धारित रहे, जहां बहुत सी बार जमाअती मुख़ालिफ़त के कारण जान का शदीद ख़तरा लाहक़ रहा। सितम्बर 2014 में बीमारी की हालत में जर्मनी आए।

3 प्रिय सारम अफ़रोज़ (इब्न आदरणीय नादिर अलताफ़ साहिब,जर्मनी) प्रिय एक जून 2015 को जन्म के बाद तीन हफ़्ते हस्पताल में ज़ेर-ए-इलाज रहने के बाद वफ़ात पा गया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

जनाज़ा ग़ायब

1 आदरणीया साद यह फ़ख़र्स साहिबा (पुत्री आदरणीय अनवरुल हक़ साहिब, रब्वा 15 अप्रैल 2015 को 28 वर्ष की आयु में गर्दन तोड़ बुख़ार के कारण देहांत पा गईं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूमा नुसरत जहां अकैडमी में बतौर टीचर और MTA में बतौर सहयोगी कारकर्दगी के अतिरिक्त मुहल्ला में भी काम करने वाले मेंबर थीं। क़ुरआन-ए-करीम अनुवाद के साथ की क्लास बाक़ायदगी से लेती थीं। मरहूमा मूसिया थीं।

2 आदरणीय मुनीरुद्दीन अहमद साहिब (इब्न आदरणीय अहमद दीन साहिब, लाहौर 13 जनवरी 2013 को 78 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम कराची में विभाग माल से लंबा अरसा सम्बंधित रहे। चंदों में निरंतर और अन्य माली तहरीकात में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे। ख़िलाफ़त के साथ इशक़ की हदतक सम्बन्ध रखने वाले मुख़लिस बावफ़ा इन्सान थे। बुलंद आवाज़ से क़ुरान-ए-पाक की तिलावत किया करते थे।

3 आदरणीय मुहम्मद मुनीर अख़तर साहिब (कैनेडा 16 मई 2015 को 84 वर्ष की आयु में टोरेन्टो कैनेडा में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम 2001 में इस्लामाबाद पाकिस्तान से कैनेडा आए थे। दस वर्ष तक बैयतुल इस्लाम मिशन हाऊस में बतौर स्वेच्छासेवक अत्यधिक मेहनत और इख़लास से सेवा करते रहे। इस से पूर्व इस्लामाबाद में सेक्रेटरी अमूरे ख़ारजा भी रहे।

4 आदरणीय अनवारुल ख़ान साहब (इब्न आदरणीय राय शमशीर अली ख़ान साहब, मह्दी आबाद जर्मनी 47 वर्ष की आयु में एक ट्रक हादिसा में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। आप अत्यधिक मिलनसार, बेलौस सेवा करने वाले और ख़िलाफ़त अहमदिया के दिल से जांनिसार थे। जर्मनी आने से पूर्व रब्वाह की एक मस्जिद में हिफ़ाज़त की डयूटी देते हुए मौलवियों के पत्थर मारने से शदीद ज़ख़मी हो गए थे परन्तु उल्टा उनके विरुद्ध ही मुक़द्दमा दर्ज किया गया और बजाय हस्पताल ले जाने के हवालात में बंद कर दिए गए। इस तरह आपको धर्म की खातिर जेल में रहने का सम्मान प्राप्त हुआ। मह्दी आबाद में क़ायद ख़ुद्दामुल अहमदिया और इस के अतिरिक्त अन्य ख़िदमात की तोफ़ीक़ पाई।

अल्लाह तआला समस्त मरहूमीन से मग़फ़िरत का व्यवहार फ़रमाए और उन्हें अपनी रज़ा की जन्नतों में जगह दे। अल्लाह तआला उनके परिजनों को सब्र करने और उनकी ख़ूबीयों को ज़िंदा रखने की तौफ़ीक़ दे आमीन।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर और अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर पधारे।

फ़ैमिली-ओ-इन्फ़िरादी मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े छ: बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज शाम के इस सैशन में 48 फ़ैमिलीज़ के 221 लोग ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी फ़ैमिलीज़ ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ जर्मनी की 39 विभिन्न जमाअतों और क्षेत्रों से बड़े लम्बी यात्रा तयकर के आई थीं OSNABRUCK से आने वाली फ़ैमिलीज़ 330 किलोमीटर, हिमबर्ग से आने वाली फ़ैमिलीज़ पाँच सौ किलोमीटर और बर्लिन से आने वाली फ़ैमिलीज़ पाँच सौ किलोमीटर की लम्बी यात्रा की थीं।

जर्मनी की जमाअतों के अतिरिक्त बाहरी देशों पाकिस्तान, अमरीका, कैनेडा और माली से आने वाले लोगों ने भी अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

मुलाक़ातों के मध्य शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों ने अपने आक़ा से क़लम प्राप्त किए और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिलने प्रेम पूर्वक छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

(शेष......................)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

वे उस लाभ से वंचित रह जाते हैं जो उन मख़लूक़ात में गुप्त हैं। सितारों और दरियाओं को ख़ुदा बनाने वाले कब उन पर हुकूमत करने का साहस कर सकते हैं और इन्सानों को ख़ुदा बनाने वाले कब उनसे लाभ उठा सकते हैं। एक नबी को ख़ुदा बनाने वाला नबी वाला लाभ उठाता नहीं और ख़ुदा वाला लाभ नबी पहुंचा नहीं सकता। अत: उसके असल लाभ से यह व्यक्ति वंचित रह जाता है। हिंदुस्तान को तरक़्क़ी के मैदान में सबसे पीछे रह जाने का बड़ा कारण यह है कि इन लोगों ने पानी और आग को ख़ुदा बनालिया और उसके सामने हाथ जोड़ कर बैठ गए, जो तरक्की के लिए दो बड़े रुकन थे। परन्तु यूरोपीयन लोगों ने उनसे काम लिया और तरक़्क़ी करके आगे निकल गए। हिंदुओं की तो यहां तक हालत है कि जब दरया ए गंगा से अंग्रेज़ नहर निकालने लगे तो उन्होंने शोर मचा दिया कि हमारे ख़ुदा को काटने लगे। मुस्लमान भी अपने तनज़्ज़ुल के वक़्त बुज़ुर्गों को ख़ुदाई सिफ़ात देकर उनसे दुआएं मांगने लगे। नतीजा यह हुआ कि उम्दा नमूना (उच्च उदाहरण) के तौर पर काम आना जो उन बुज़र्गों का असल लाभ था उससे वंचित हो गए और दुआएं सुनने की उन देहांत पा चुके बुज़ुर्गों में ताक़त ही नहीं थी अत: उन्हें उच्चतम स्थान देकर उनको तो कोई लाभ नहीं पहुंचाया, आप लाभ से वंचित रह गए। इस आयत में बताया है कि शिर्क इन्सानी तरक़्क़ी में एक ज़बरदस्त रोक है और शिर्क की वजह से इन्सान मख़लूक़ात से वह लाभ प्राप्त नहीं कर सकता जो ख़ुदा तआला ने उनमें गुप्त रखा है। . وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ उनकी दुआ ज़ाए इस तरह होती है कि वह अपने स्थान पर नहीं पहुँचती। दुआ तो वह है जो ख़ुदा तआला के पास जाए। यदि पत्र या पैग़म्बर किसी दूसरी जगह चला जाए तो उसका जाना न जाना बराबर होता है। इसी तरह फ़रमाया कि काफ़िरों की दुआ बे पता रह जाती है। दुआ की स्वीकृति का असल स्थान तो अल्लाह तआला की ज़ात है। ये लोग अपनी दुआओं पर अल्लाह तआला का पता लिखते तो उनकी दुआएं ख़ुदा तक ज़रूर पहुंचतीं और उनको उत्तर आ जाता। परन्तु उन लोगों ने तो मख़लूक़ात का पता लिखना शुरू कर दिया जो दुआ को स्वीकार करने की ताक़त नहीं रखते इस लिए उनकी दुआ ज़ाए हो जाती है और तदबीरें नाकाम हैं।

(तफ़सीर कबीर, जल्द 3 पृष्ठ 397 प्रकाशन क़ादियान 2010

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad